तुलसीकृत

रामायण

* अयोध्याकाण्ड *

गोसाईंजी के हाथ का लिखा हुआ जो उनकी
प्रसिद्ध जन्मभूमि राजापुर में रक्खा है
उसकी प्रतिलिपि (नक़ल)

श्री अवधवासी भूप उपनाम
लाला सीताराम बी० ए०

"लक्ष्मीनारायण" प्रेस मुरादाबाद में
छपाया

प्रकाशक
किशोरब्रादर्स
२०३ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

दाम ॥) [पहिली बार १०००

Cover Printed at Rajpali Press, Allahabad.



अति आनन्द उमगि अनुरागा। चरनसरोज पखारन लागा॥ पृ० ४४

तुलसीकृत—

रामायण

अयोध्याकाण्ड

गोशाईंजी के हाथ का लिखाहुआ जो उनकी प्रसिद्ध
जन्मभूमि राजापुर में रक्खा है
उसकी प्रतिलिपि (नक़ल)

अवधवासी भूप उपनाम—

लाला सीताराम बी. ए.

ने

“लक्ष्मीनारायण” प्रेस मुरादाबाद में
छपाया

प्रकाशक—

बाबू कोशल किशोर
देहरादून

दाम ॥)

अवसि देखिये देखन योगू।

यह ग्रंथ अनेक कारणों से सस्ता छापागयाहै पर इसको सुन्दर रूपसे छपाने का उद्योग हो रहा है। उसके साथ श्रीमर्यादापुरुषोत्तम के अवतार का कारण उनके चरितोंसे उपदेश श्रीगोसाईं तुलसीदास का जीवन-चरित, उनकी कुटी का चित्र, बनयात्रा के नकशा, अयोध्या चित्रकूट आदिके प्रासिद्ध तीर्थों का फोटो ब्लाक चित्र राजा रविवर्माके चित्रका फोटो ब्लाक शब्द कोश आदि दिया जायगा। सुन्दर कपड़े की जिल्द पर सुनहरे अक्षरों में नाम और श्रीराम जानकी का चित्र होगा। चित्र विलायत से छपकर आगये हैं। इस ग्रंथ की थोड़ी ही प्रतियां छापी जायंगी जिन महाशयों को लेना हो अभी से सूचित कर दें। दाम ३) से अधिक न होगा॥

कौसलकिशोर-देहरादून

श्री अवधवासी सीतारामके रचेग्रंथ।

रघुवंशभाषा, रघु दशरथ श्रीरामचंद्रकुश आदि के चरित चौपाइयों में ॥) कुमारसंभव-श्री पार्वतीजी का जन्म तपस्या और विवाह =)॥ ऋतु संहार ऋतुवर्णन ‌‌‌‌-)॥ नईराजनीति दोनों भाग ॥) नीतिवाटिका, गुलिस्तां के ४ भाग ॥) उत्तररामचरित नाटक ।=) इत्यादि.

भूमिका

राम कथा सुरधेनु सम सेवत सब सुखदानि।
सत समाज सुर लोक सब को न सुनइ अस जानि॥

श्रीरघुनाथजी के भक्तों के सिरमौर श्री गोसाईं तुलसीदास जी का रामायण अनेक रूप से अनेक बार छप चुका। छापने छपाने वाले सब अपने २ ग्रंथ की बड़ाई करते हैं। क्योंकि अपने दही को खट्टा कौन कहेगा। पर चार पुस्तक इकट्ठा कीजिये तो किसी के दो पन्ने एक से न होंगे। इसका क्या कारण है? गोसाईं जी ने तो एक ही रामचरित्र मानस लिखा है किसी में "बायस पालिय अति अनुरागा"। किसी में पायस... किसी में "वर्ण्यं के च धिभाति" किसी में "यामांके" इत्यादि भेदों का क्या कारण है। कहीं २ तो इस अदला बदली के कारण अर्थ ही व्यर्थ हो गया है। जैसा इस ग्रंथ का प्रचार बहुत है वैसे ही पंडित और गंवार दोनों इस के अर्थ करन में अपनी चतुराई ही नहीं खर्च करते वरन पाठ में भी अंड बंड कर देते हैं। इसका एक उदाहरण मैंने अपने लड़कपन ही में सुना था। सुन्दर कांड में "रहा न नगर बसन घृत तेला" के अर्थ में यह शंका हुई कि क्या जानकी जी नंगी बैठी थीं उस पर एक बाबा जी ने यों समाधान किया कि मात्रा का हेर फेर है शुद्ध पाठ यह है कि 'राहन नगर बसन घृत तेला'। यों तो पाठ बदला। इतने पर भी लोगों को संतोष न हुआ। बाल कांड में "गाधि सुवन सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई" के पीछे गंगा जी की कथा जोड़ दी गई। ऐसे क्षेपकों के पक्षपाती एक महाशय कहते हैं कि क्षेपक कोई इन्द्रायण के फल नहीं हैं। मैं यह पूछता हूं कि रामायण तो गोसाईं तुलसीदास का रचा हुआ प्रसिद्ध है। [illegible] है वही आज दिन अधिकांश हिन्दुओं का वेद है उस[illegible]प क्यों घुसेड़ते हैं। कोई कथा 'प्रसंग [illegible] क्यों

न लगादी जाय ? किसी २ पोथी में क्षेपक अलग हैं पर बहुधा तो एक साथ ही छपे हैं। क्या कोई यह भी कह सक्ता है कि गोशाईं जी की काव्य रचना में दूसरे की कविता मिल सकती है ? क्या उन के भक्तिभाव को कोई पा सकता है? यही गति रही तो किसी दिन ईसाई भी कोई कथा रचकर जोड़ देंगे। आज दिन गोशाईं जी के नाम से सैकड़ों दोहे प्रसिद्ध हो रहे हैं जो उनके रचे नहीं हो सके। क्या और भी संसार में कोई धर्म्म पुस्तक है जिसकी ऐसी दुर्दशा हुई हो ? मेरी समझ में तो ऐसी रचनाओं को इस परम पवित्र ग्रंथ में जगह देना कविता और धर्म्म दोनों के विचार से पाप है। विदित हो कि हिन्दुस्तान में दो ही प्रतियां गोशाईं जी के हाथ की प्रसिद्ध हैं एक अयोध्या कांड मात्र राजा पूर में दूसरी सम्पूर्ण रामायण (एक पत्र कम) मलिहाबाद में है जो गोशाईं जी ने एक भांट को दी थी। दोनों पूजी जाती हैं। राजा पूर की प्रति की अनेक प्रतिलिप (नकलें) उतारी गई हैं। एक गवर्नमेण्ट की आज्ञा से भाषा के परम प्रेमी विज्ञातिविज्ञ डाक्टर ग्रियर्सन साहब के लिये लिखी गई, जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर लिखने वाले के हस्ताक्षर हैं। एक श्रीमान् पण्डित ज्वालाप्रसाद शंखधर एम० ए०, एस० सी० एस० ने जो आज कल मुज़फ्फ़रनगर के कलक्टर हैं उतरवाई थी। उसके दस पृष्ठों का फ़ोटो चित्र भी लिया गया है। मैं ने भी एक प्रति शुद्ध करके मंगाई है। इन्हीं दोनों प्रतियों से यह ग्रंथ छापकर प्रकाश किया जाता है। मेरा विचार यह था कि इस अपूर्व ग्रंथ के साथ चित्रकूट तक बन यात्रा का नक़शा, अयोध्या, चित्रकूट आदि के प्रसिद्ध स्थानों के फ़ोटो चित्र दिये जाते। यह सब चित्र विलायत में छपे हैं पर अनेक कारणों से इस ग्रंथ को इसी रूप में निकालना उचित समझा गया। मुझे देहरा दून में छुट्टी न रही, प्रूफ़ आदि लड़कों ने देखा है संभव है कि कहीं २ अशुद्धियां रह गई हों पर मुझे आशा है कि राजापूर के प्रति की यथा सम्भव शुद्धि नक़ल यही पहिले पहिल छपी है और श्री रघुनाथ जी के भक्त इस को आदर से देखेंगे ॥

देहरादून श्री अवधवासी सीताराम

१४ म

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ।

रामायण

तुलसीकृत

अयोध्याकांड ।

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीजानकीवल्लभोविजयते ॥

यस्यांके च बिभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालबिधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट ॥
सोयं भूतिबिभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करःपातु मां॥१॥
प्रसंनतां यान गताभिषेकतस्तथा न मम्ले बनबासदुःखतः
मुखांबुजश्रीरघुनंदनस्यमे सदास्तुसा मंजुलमंगलप्रदा॥२॥
नीलांबुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितबामभागं ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुबंशनाथं॥३॥

श्रीगुरुचरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनो रघुबर बिमल जसु जो दायकु फलचारि ॥

जब ते रामु ब्याहि घर आए । नित नवमंगल मोद बधाए
भुवन चारि दस भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुषबारी
रिधिसिधिसंपतिनदीसुहाई । उमगि अवधअंबुधिकहुंआई
मनिगनपुरनरनारि सुजाती । सुचिअमोल सुंदरसबभांती
कहि नजाइ कछु नगरबिभूती । जनुयेतनिअ बिरंचि करतूती

सबबिधि सबपुरलोगसुषारी । रामचंदमुषचंदु निहारी
मुदित मातु सब सषी सहेली । फलितबिलोकि मनोरथबेली
रामरूप गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देषि सुनिराऊ

दोहा॥सब के उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।
आप अछत जुबराज पद रामहिं देउ नरेसु॥ १ ॥

एकसमय सबसाहितसमाजा । राजसभा रघुराजु बिराजा
नृप सबरहहिं कृपाअभिलाषे । लोकपकरहिं प्रीति रुषराषे
तिभुवन तीनिकाल जगमाहीं । भूरि भाग दसरथसम नाहीं
मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछुकहिअ थोरसबुतासू
रायसुभायमुकुरु करलीन्हा ।बदनुबिलोकिमुकुटुसमकीन्हा
स्रवनसमीप भये सितकेसा । मनहुं जरठपनु असउपदेसा
नृप जुवराजु राम कहुं देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू

दोहा॥यहबिचारु उर आनिनृप,सुदिन सुअवसरुपाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन,गुरहिंसुनायेउजाइ॥२॥

कहइभुआलुसुनिअमुनिनायक। भयेरामसबबिधिसबलायक
सेवक सचिव सकल पुरबासी ।जे हमार अरि मित्र उदासी
सबहिंरामुप्रियजेहिबिधिमोही प्रभुअसीसजनुतनुधरिसोही
बिप्र सहित परिवार गोसांई ।करहिंछोहु सब रौरिहिनांई
जे गुरचरनरेनु सिर धरहीं । तेजनुसकलबिभवबसकरहीं
मोहि सम यहुअनुभयेउनदूजें । सबुपायेउंरजपावनि पूजें
अबअभिलाषुएकुमन मोरें । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें
मुनि प्रसंन लषि सहज सनेहू । कहेउ नरेस रजायसु देहू

दोहा॥राजन राउर नामु जसु सब अभिमतदातार ।
फलअनुगामी महिपमनि मनअभिलाषु तुम्हार॥३॥

सब बिधि गुरुप्रसंन जिय जानी। बोलेउ राउरहँसि मृदुबानी
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू । कहिअकृपाकरिकरिअसमाजू
मोहि अछत यहु होइउछाहू । लहहिं लोग सबलोचनलाहू
प्रभुप्रसादसिव सबइनिबाहीं। एह लालसा एक मन माहीं
पुनि न सोचतनुरहउकि जाऊ। जेहि न होइ पाछेपछिताऊ
सुनिमुनिदसरथबचन सुहाए। मंगलमोद मूल मनभाए
सुनुनृपजासुबिमुखपछिताहीं। जासुभजनबिनुजरनिनजाहीं
भयेउतुम्हार तनयसोइस्वामी। रामु पुनीत प्रेमअनुगामी

दोहा ।। बेगि बिलंबु न करिअनृप साजिअ सबुइ समाजु ।
सुदिनु सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ।।४।।

मुदितमहीपति मंदिरआए । सेवक सचिवसुमंत्रु बोलाए
कहिजयजीवसीसतिन्हनाए। भूप सुमंगल बचन सुनाए
जौ पांचहि मत लागइ नीका। करहुहरषि हियरामहिं टीका
मंत्री मुदित सुनत प्रियबानी । अभिमतबिरवपरेउजनुपानी
बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी। जिअहुजगतपतिबरिसकरोरी
जगमंगल भल काजुबिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा
नृपहिंमोदुसुनिसचिवसुभाषा। बढतबौंड जनु लही सुसाखा

दोहा ॥ कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।
राम राजअभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ।।५।।

हरषि मुनीस कहेउ मृदुबानी। आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चरमबसनबहु भांती। रोम पाट पट अगनित जाती
मनिगन मंगलवस्तु अनेका । जो जग जोगु भूपअभिषेका
बेदबिदितकहिसकलबिधाना। कहेउरचहुपुरबिबिधबिताना

सफल रसाल पूगफल केरा । रोपहु बीथिन्ह पुर चहुं फेरा
रचहु मंजु मनि चौकइ चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । सबबिधि करहु भूमिसुरसेवा

दोहा॥ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग।
सिरधरिमुनिबर बचनसबुनिज निज काजहिलाग॥६॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा सोतेहिकाजुप्रथमजनुकीन्हा
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत रामहित मंगलकाजा
सुनत रामअभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा
राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहिं मंगल अंग सुहाए
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं ।भरत आगमनु सूचकअहहीं
भये बहुत दिन अतिअवसेरी । सगुनप्रतीति भेंट प्रिय केरी
भरतसरिस प्रिय.को जगमाहीं। इहइ सगुनफलु दूसरनाहीं
रामहिं बंधुसोच दिन राती।अंडन्हिकमठ हृदउजेहिभांती

दोहा॥एहि अवसर मंगलुपरम, सुनिहरसेउ रनिवासु ।
सोभतलषि बिधुबढतजनु,बारिधिबीचिबिलासु॥७॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचनसुनाए। भूषनबसनभूरि तिन्ह पाए
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं। मंगलकलस सजनसबलागीं
चौकइ चारु सुमित्रा पूरी । मनिमयबिबिध भांतिअतिरूरी
आनंद मगन राममहतारी । दिये दान बहु बिप्र हंकारी
पूजी ग्रामदेवि सुर नागा । कहेउ बहोरिदेन बलिभागा
जेहिबिधिहोइ राम कल्यानू । देहु दया करि सो बरदानू
गावहिं मंगल कोकिलबयनी । बिधुबदनीमृगसावकनयनी

दोहा॥राम राज अभिषेकु सुनि, हिय हरषे नरनारि ।
लगे सुमंगल सजन सब,बिधिअनुकूल बिचारि॥८॥

तब नरनाह बसिष्ठु बोलाये । रामधाम सिष देन पठाये
गुरआगमन सुनत रघुनाथा । द्वार आइ पद नायेउमाथा
सादर अरघ देइ घर आने । सोरहभांतिपूजि सनमाने
गहे चरन सियसहित बहोरी । बोले रामु कमलकर जोरी
सेवकसदन स्वामिआगमनू । मंगलमूल अमंगलदमनू
तदपि उचित जनु बोलिसप्रीती । पठइअकाजनाथअसिनीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु यहु गेहू
आयसु होइ सो करउं गोसाईं । सेवकु लहइ स्वामिसेवकाईं

दोहा॥ सुनि सनेहसाने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस ।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंसबंसअवतंस ॥९॥

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेकसमाजू । चाहतदेन तुम्हहिं जुवराजू
राम करहु सब संजम आजू । जौंबिधिकुसलनिबाहइकाजू
गुरसिष देइ राय पहिं गयेऊ । रामहृदयअसबिसमउभयेऊ
जनमे एक संग सब भाई । भोजनसयन केलि लरिकाई
करनबेध उपबीत बिआहा । संग संग सब भये उछाहा
बिमलबंसयहु अनुचित एकू । बंधु बिहाइ बडेहिं अभिषेकू
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगतमन कै कुटिलाई

दोहा॥ तेहि अवसर आए लषन मगन प्रेम आनंद ।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुलकैरवचंद ॥ १० ॥

बाजहिं बाजनबिबिधबिधाना । पुरप्रमोदु नहिं जाइ बषाना
भरतआगमनुसकलमनावहिं । आवहुंबेगि नयनफलपावहिं
हाट बाट घर गली अथाई । कहहिं परसपरलोगलोगाई
कालिलगन भलिकेतिकबारा । पूजिहिबिधिअभिलाषुहमारा

कनकसिंघासन सीयसमेता । बैठहिं रामु होइ । चित चेता
सकलकहहिं कब होइहिकाली॥ बिघन मनावहिं देव कुचाली
तिन्हहिसोहाइनअवधबधावा। चोरहिंचंदिनिरातिनभावा
सारदबोलि बिनय सुरकरहीं । बारहिंबार पाय लै परहीं

दोहा॥ बिपति हमारि बिलोकिबडि मातुकरिअ सोइआजु।
रामुजांहि बन राजुतजि·होइसकल सुरकाजु ॥११॥

सुनिसुरबिनयठाढिपछिताती॥ भइउंसरोजबिपिनहिमराती।
देषि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं थोरिउषोरी
बिसमय हरष रहित रघुराऊ। तुम्ह जानहु सब रामप्रभाऊ
जीव करमबससुषदुष भागी। जाइअ अवध देवहितलागी
बारबार गहि चरनसंकोची। चलीबिचारिबिबिधमतिपोची
ऊंच निवासुनीचिकरतूती । देखि न सकहिंपराइबिभूती
आगिलकाजु बिचारिबहोरी। करिहहिंचाहकुसलकबिमोरी
हरषिहृदय दसरथपुर आई । जनु ग्रहदसा दुसह दुषदाई

दोहा॥ नामु मंथरा मंदमति चेरी कैकै केरि ।
अजसपेटारी ताहि करि गई गिरा मतिफेरि॥१२॥

दीख मंथरा नगरुबनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा
पूंछेसि लोगन्ह काह उछाहू । रामतिलकु सुनि भा उरदाहू
करैइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती। होइ अकाजुकवनिबिधिराती
देखिलागिमधुकुटिलकिराती। जिमिगवंतकइलेउंकेहि भांती
भरतमातु पहिंगइबिलषानी। काअनमनिहसिकहहंसिरानी
ऊतरु देइ न लेइ उसासू । नारिचरित करि ढारइ आंसू
हंसि कह रानिगालुबड तोरें। दीन्ह लषनसिषअसमनमोरें
तबहुंन बोलचेरिबडिपापिनि। छाडइस्वासकारिजनुसांपिनि

दोहा॥सभय रानि कह कहसि किनकुसलरामुमहिपालु ।
लषनुभरतुरिपुदमनु सुनिभाकुबरीउरसालु ॥१३॥

कतसिषदेइ हमहिं कोउमाई । गालुकरबकेहिकरबलुपाई
रामहिंछाडि कुसल केहिआजू। जेहिजनेसु देइ जुबराजू
भयउकौसिलहिबिधिअतिदाहिन।देषतगरबरहतउरनाहिन
देखहु कस न जाइ सब सोभा ।जो अवलोकिमोर मनुछोभा
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें । जानतिहहु बस नाहु हमारें
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । लषहु न भूप कपट चतुराई
सुनिप्रियबचनमलिनमनुजानी । झुकीरानिअबरहुअरगानी
पुनि असकबहुं कहसिघरफोरी। तब धरिजीभकढावौंतोरी

दोहा ॥ काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि, भरतमातु मुसुकानि॥१४॥

प्रियबादिनिसिख दीन्हिउं तोही।सपनेहुतोपरकोपु न मोही
सुदिनु सु मंगल दायकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिनहोई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । येह दिनकरकुल रीति सुहाई
रामतिलकु जौ सांचेहु काली। देउं मागु मनभावत आली
कौसल्यासम सब महतारी । रामहिंसहजसुभाय पिआरी
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी । मैं करि प्रीति परीछा देखी
जौ बिधि जनमु देइकरिछोहू । होहुंरामासिय पूतपुतोहू
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें । तिन्हके तिलकछोभुकसतोरें

दोहा॥ भरतसपथ तोहि सत्य कहु परिहरिकपटदुराउ ।
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ।१५।

एकहि बार आस सब पूजी । अबकछुकहब जीभ करिदूजी
फोरैजोगु कपारु अभागा । भलेउकहतदुषरौरेहिं लागा

कहहिं झूठि फुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हहिं करुइ मैं माई
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती। नाहि त मौन रहब दिनु राती
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा। बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा
कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाडि अब होब कि रानी
जारइ जोगु सुभाउ हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
ताते कछुक बात अनुसारी। छमिअ देवि बडि चूक हमारी

दोहा॥ गूढ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि।
सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पति आनि।१६।

सादर पुनि पुनि पूंछति ओही। सबरीगान मृगी जनु मोही
तसि मति फिरी अहइ जसि भावी। रहसी चेरि घात जनु फाबी
तुम्ह पूंछहु मैं कहत डेराऊं। धरेहु मोर घरफोरी नाऊं
सजि प्रतीति बहुबिधि गढि छोली। अवध साढसाती तब बोली
प्रियसियरामु कहा तुम्ह रानी। रामहिं तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी
रहा प्रथम अब ते दिन बीते। समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते
भानुकमल कुल पोषनिहारा। बिनु जल जारि करइ सोइ छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी। रूंधहु करि उपाउ बरबारी

दोहा॥ तुम्हहिं न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ।
मन मलीन मुहु मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ।१७॥

चतुर गंभीर राममहतारी। बीचु पाइ निज बात संवारी
पठये भरतु भूप ननिऔरें। राम मातु मत जानब रौरें
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें। गरबित भरतमातु बल पी कें
सालु तुम्हार कौसिलहि माई। कपट चतुर नहिं होइ जनाई
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी। सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी
रचि प्रपंचु भूपहिं अपनाई। राम तिलक हित लगन धराई

येहुकुलउचितरामकहुं टीका। सबहिसोहाइ मोहिसुठिनीका
आगिल बात समुझि डरुमोही। देउदैउ फिरिसो फलुओही
दोहा ॥ रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपटप्रबोधु
कहिसि कथा सत सवातिकै जेहि बिधिबाढबिरोधु १८
भावीबस प्रतीति उर आई। पूंछ रानि पुनि सपथदेवाई
कापूछहुतुम्हअबहुंनजाना। निजहितअनहितपसुपहिचाना
भयेउपाखुदिनसजतसमाजू। तुम्हपाईसुधि मोहिसन आजू
खाइअ पहिरिअराजतुम्हारें। सत्य कहें नहि दोषु हमारें
जौं असत्य कछुकहबबनाई। तौबिधि देइहि हमहिंसजाई
रामहितिलककालिजौं भयेऊ तुमकहुंबिपतिबीजुबिधिबयेऊ
रेख खचाइकहउंबलु भाषी। भामिनि भइहु दूध कइ माषी
जौंसुतसहितकरहुसेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई
दोहा ॥ कद्रू बिनतहि दीन्ह दुषु तुम्हहि कौसिला देब।
भरतु बंदिगृह सेइहहिं लषनु राम के नेब ॥१९॥
कैकयसुतासुनतकटुबानी। कहिनसकइकछुसहमिसुखानी
तनपसेउकदलीजिमिकांपी। कुबरी दसन जीभ तब चांपी
कहिकहिकोटिककपटकहानी। धीरजु धरहु प्रबोधिसिरानी
फिराकरमु प्रियलागिकुचाली। बकिहि सराहइमानिमराली
सुनु मंथरा बात फुरितोरी। दहिनिआंषिनितफरकइमोरी
दिनप्रतिदेषहुंरातिकुसपनें। कहउं न तोहि मोहबसअपनें
काह करौंसषि सूधसुभाऊ। दाहिन बाम न जानउं काऊ
दोहा ॥ अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुककीन्ह।
केहि अघएकहि बारमोहिदैअँदुसहदुषुदीन्ह ॥२०
नैहर जनमु भरब बरु जाई। जियत न करबिसवतिसेवकाई
अरिबसदैउ जियावतजाही। मरनु नीक तेहि जीव न चाही

दीनबचन कह बहुबिधि रानी। सुनि कुबरीं तियमाया ठानी
अस कसकहहु मानिमनऊना। सुखुसोहागुतुम्हकहुंदिनदूना
जेहिंराउरअतिअनभलताका। सोइपाइहियेहुफलुपरिपाका
जबतें कुमत सुनामैंस्वामिनि। भूख नबासरनीद न जामिनि
पूंछेउं गुनिन्ह रेख तिन्ह षांची। भरतभुआलहोंहिंयहसांची
भामिनि करहु त कहउंउपाऊ। हइ तुम्हरीं सेवाबस राऊ
दोहा॥ परउं कूप तुअ बचनपर सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुखु देखिबड कस न करब हित लागि२१
कुबरीं करि कबुली कैकेई। कपटछुरी उरपाहन टेई
लखइ न रानि निकट दुखु कैसें। चरइहरिततिनबलिपसुजैसें
सुनत बात मृदु अंत कठोरी। देति मनहु मधु माहुर घोरी
कहइचेरिसुधिअहइकिनाहीं। स्वामिनिकहिहुकथामोहिपाहीं
दुइ बरदान भूप सन थाती। मांगहु आजु जुडावहु छाती
सुतहि राजु रामहि बनवासू। देहुलेहु सब सवतिहुलासू
भूपति रामसपथ जब करई। तब मांगेहुजेहि बचनु न टरई
होइअकाजु आजुनिसिबीते। बचनु मोर प्रिय मानेहु जी ते
दोहा॥ बड कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु
काजु संवारेहु सजगसबु सहसाजनिपतिआहु॥२२॥
कुबरिहि रानिप्रानाप्रियजानी। बारबार बडि बुद्धि बखानी
तोहि सम हित न मोरसंसारा। बहेजातकइ भइसिअधारा
जौं बिधि पुरवमनोरथुकाली। करौं तोहि चखपूतरिआली
बहुबिधि चेरिहि आदरु देई। कोपभवन गवनी कैकेई
बिपति बीजु बरषारितु चेरी। भुंइ भइ कुमतिकैकईकेरी
पाइ कपटजलु अंकुर जामा। बरदोउदलदुखफलपरिनामा
कोपसमाजु साजि सबु सोई। राजु करतनिज कुमतिबिगोई

राउरनगर कोलाहलु होई । यह कुचालि कछुजान न कोई

दोहा॥ प्रमुदित पुर नरनारिसब सजहिं सुमंगल चार ।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहि भीर भूपदरबार॥२३॥

बालसखासुनिहिय हरषाहीं। मिलिदसपांचरामपहिं जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी।पूंछहिंकुसल षेम मृदुबानी
फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई। करत परसपर राम बड़ाई
को रघुबीर सरिस संसारा। सीलु सनेहु निबाहनिहारा
जेहिजेहिजोनिकरमबसभ्रमहीं। तहं तहं ईसु देउ यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सियनाहू। होउ नात येह ओर निबाहू
असअभिलाषुनगरसबकाहू। कैकयसुता हृदय अतिदाहू
को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीचमतें चतुराई

दोहा॥ सांझ समय सानंद नृपु गयेउ कैकई गेह ।
गवनु निठुरतानिकट किये जनुधरि देहसनेह॥२४॥

कोपभवन सुनिसकुचेउराऊ। भयबस अगहुड़ परइ नपाऊ
सुरपति बसइ बाहबल जाके। नरपातिसकल रहहिंरुषताके
सोसुनितियरिसगयउसुषाई। देषहु कामप्रताप बड़ाई
सूलकुलिसअसिंअंगवनिहारे। ते रतिनाथ सुमनसर मारे
सभयं नरेसु प्रिया पहिं गयेऊ। देषि दसा दुषु दारुन भयेऊ
भूमिसयन पटु मोट पुराना। दिये डारि तन भूषन नाना
कुमतिहिकसिकुबेषताफाबी। अनअहिवातुसूचजनुभाबी
जाइ निकट नृपु कह मृदुबानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी

छंदु॥केहिहेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहिनेवारई।
मानहुं सरोष भुअंगभामिनि बिषम भांति निहारई॥
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देषई।

तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम कौतुक लेषई ॥
सोरठा॥ बार बार कह राउ सुमुषि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निजकोपकर२५॥
अनहिततोरप्रियाकेइंकीन्हा।केहिदुइसिरकेहिजमुचहलीन्हा
कहु केहि रंकहि करउं नरेसू । कहु केहि नृपहिनिकासउंदेसू
सकौंतोर अरि अमरउमारी । काह कीट बपुरे नरनारी
जानसि मोर सुभाउबरोरू । मनु तव आनन चंद चकोरू
प्रिया प्रानसुत सरबसु मोरें । परिजन प्रजासकल बसतोरें
जौंकछुकहउंकपटुकरितोहीं । भामिनिरामसपथ सतमोहीं
बिहंसिमांगुमनभावतिबाता। भूषन सजहिं मनोहर गाता
घरी कुघरीसमझि जियदेषू । बेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू
दोहा॥येह सुनि मन गुनि सपथ बडि बिहंसि उठी मतिमंद
भूषनसजनिबिलोकिमृगु मनहुंकिरातिनिफंद॥२६॥
पुनिकहराउसुहृदजिअजानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी
भामिनिभयेउतोरमनभावा। घरघर नगर अनंदबधावा
रामहि देउं कालि जुबराजू। सजहि सुलोचनिमंगलसाजू
दलकिउठेउसुनिहृदयकठोरू। जनु छुइ गयेउ पाक बरतोरू
ऐसिउ पीर बिहंसितेहिंगोई। चोरनारि जिमि प्रगटिनरोई
लषहि न भूप कपट चतुराई। कोटि कुटिल मनि गुरू पढाई
जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू।नारिचरित जलनिधिअवगाहू
कपटसनेहु बढाइ बहोरी । बोली बिहंसि नयन मुहु मोरी
दोहा॥ मांगु मांगु पै कहहु पिय कबहुं न देहु न लेहु।
देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥ २७ ॥
जानेउंमरमु राउ हंसि कहई। तुम्हहिकोहाबपरमप्रियअहई
थाती राषि नमांगिहुकाऊ। बिसरिगयेउमोहिभोरसुभाऊ

झूठेहु हमहि दोमुजानिदेहू । दुइ कै चारि मांगि मकु लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई ।प्रान जाहुंबरु बचनु न जाई
नहिं असत्यसम पातकपुंजा ।गिरिसमहोंहिंकिकोटिकगुंजा
सत्यमूल सब सुकृति सुहाये । बेदपुरानबिदित्ति मनु गाये
तेहिपर राम सपथ करिआई । सुकृत सनेह अवध रघुराई
बातदृढाइकुमति हंसिबोली ।कुमतकुबिहंगकुलहजनुषोली

दोहा॥ भूप मनोरथ सुभगबनु सुष सुबिहंग समाजु ।
भिल्लिनिजिमि छाडनचहति, बचनु भयंकरुबाजु॥२८॥

सुनहुंप्रानप्रिय भावत जी का ।देहु एक बर भरतहि टीका
मागौं दूसर बर करजोरी ।पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी
तापसबेष बिसेषि उदासी ।चौदह बरिस रामु बनबासी
सुनिमृदुबचनभूपहियसोकूससिकरछुअतबिकलजिमिकोकू
गयेउसहमिनहिंकछुकहिआवा। जनुसचानबनझपटेउलावा
बिबरन भयेउ निपट नरपालू । दामिनिहनेउंमनहुतरु तालू
माथे हाथ मूंदि दोउलोचन ।तनुधरिसोचुलागजनुसोचन
मोर मनोरथु सुर तरु फूला ।फरतकरिनिजिमिहतेउसमूला
अवध उजारि कीन्हि कैकेई ।दीन्हिसिअचलबिपति कै नेई

दोहा॥ कवनें अवसर का भयेउ गएउं नारिबिस्वास।
जोग सिद्धि फल समगजिमि जातिहिअबिद्यानास॥

एहिबिधिराउमनहिमनझांषा।देखिकुभांतिकुमतिमनुमांषा
भरतु कि राउर पूत न होहीं।आनेहु मोल बेसाहिकिमोहीं
जो मुनिसरुअसलागतुम्हारं ।काहे न बोलहु बचनु संभारं
देहुउतरुअनुकरहु कि नाहीं।सत्यसंधतुम्ह रघुकुल माहीं
देन कहेहुअब जनि बरु देहू ।तजहु सत्य जग अपजसु लेहू

सत्य सराहि कहेहु बरु देना।जानेहु लेइहि मांगि चबेना
सिबिदधीचि बलिजोकछु भाषा।तनुधनुतजेउबचनपनुराषा
अति कटु-बचनकहति कैकेई। मानहु लोन जरे पर देई

दोहा॥ धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे राय ।
सिरुधुनिलीन्हि उसासअसिमारेसिमोहि कुठाय३०

आगेंदीषि जरत रिसभारी। मनहु रोष तरवारि उघारी
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरीं सान बनाई
लषी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा
बोलेउ राउ कठिनकरिछाती।बानी सबिनय तासु सोहाती
प्रियाबचनकसकहसिकुभांती।भीर प्रतीति प्रीतिकरिहांती
मोरें भरतु रामु दुइ आंषी।सत्य कहउं करिसंकरु साषी
अवसि दूतु मैं पठइब प्राता।ऐहहिं बेगि सुनत दोउभ्राता
सुदिन सोधि सबुसाजुसजाई। देउं भरत कहु राजु बजाई

दोहा॥लोभु न रामहिं राजुकर बहुत भरतपर प्रीति ।
मैं बडछोट बिचारिजिय करत रहेंउं नृपनीति॥३१॥

राम सपथ सत कहउं सुभाऊ। राममातु कछु कहेउ न काऊ
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूंछें। तेहि ते परेउ मनोरथ छूछें
रिस परिहरु अब मंगल साजू। कछु दिनगए भरतजुबराजू
एकहिं बात मोहि दुषु लागा। बर दूसर असमंजस मागा
अजहूं हृदउजरत तेहिआंचा।रिसपरिहासकि सांचेहुसांचा
कहु तजि रोषु रामअपराधू। सबुकोउकहइरामु सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहिं भयेउ संदेहू
जासुसुभाउअरिहिअनुकूला।सोकिमिकरिहिमातुप्रतिकूला
दोहा॥प्रियाहास रिस परिहरहि मागु बिचारि बिबेकु ।

जेहि देषौं अषनयनभरि भरतराज अभिषेकु ॥१२॥
जिअइमीनबरुबारिबिहीना मनिबिनुफनिकुजिअइदुषदीना
कहउंसुभाउनछलु मन माहीं। जीवनु मोर रामुबिनुनाहीं
समुझि देषुजियप्रिया प्रबीना। जीवनु राम दरस आधीना
सुनिमृदुबचनकुमतिअतिजरई। मनहुअनलआहुतिघृतपरई
कहइकरहुकिनकोटिउपाया। यहांनलागिहिराउरिमाया
देहु कि लेहु अजसु करिनाहीं। मोंहिं न बहुत प्रपंच सोहाहीं
रामु साधु तुम्ह साधु सयानें। राममातु भलि सब पहिचानें
जसकौसिलोंमोरभलताका। तसफलुउन्हहिंदेउंकरिसाका
दोहा॥होत प्रातु मुनिबेष धरि जौं न रामु बन जाहिं।
मोर मरनुराउर अजसु नृप समुझियमनमाहिं ॥१३॥
असकहिकुटिलभईउठि ठाढी। मानहु रोष तरंगिनि बाढी
पाप पहार प्रगट भइ सोई। भरीक्रोध जल जाइन जोई
दोउ बरकूल कठिनहठ धारा। भवंर कूबरी बचन प्रचारा
ढाहत भूपरूप तरुमूला। चली बिपतिबारिधि अनुकूला
लषी नरेस बात फुरि सांची। तियमिसमीचुसीसपरनांची
गहिपद बिनयकीन्ह बैठारी। जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी
मांगु माथ अबहीं देउं तोही। रामाबिरह जनि मारसि मोही
राषुरामकहुंजेहि तेहिभांती। नाहिंतजरिहिजनमभरिछाती
दोहा॥देषी ब्याधि असाधि नृपु परेउ धरनि धुनिमाथ।
कहत परम आरतबचन राम राम रघुनाथ ॥१४॥
ब्याकुलराउसिथिलसबगाता। करिनिकलपतरुमनहुनिपाता
कंठु सूष मुष आव न बानी। जनु पाठीनु दीनु बिनु पानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेई। मनहुं घाय महुं माहुर देई

जौं अंतहु अस करनबु रहेऊ। मांगु मांगु तुम्ह केहिबलकहेऊ
दुइकिहोइएकसमयभुआला। हंसब ठठाइ फुलाउबगाला
दानि कहाउब अरु कृपनाई। होइ कि षेम कुसल रौताई
छांडहु बचनु कि धीरजुधरहू। जनिअबलाजिमिकरुनाकरहू
तनुतियतनयधामुधनुधरनी। सत्यसंध कहुं तृनसम बरनी

दोहा॥मरमबचन सुनिराउ कह कहु कछु दोषुनतोर।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर॥२९॥

चहत न भरत भूपतहिभोरें। बिधिबसकुमतिबसीजियतोरें
सो सबु मोर पापपरिनामू। भयेउकुठाहरजेहि बिधिबामू
सुबसबसिहि फिरि अवध सुहाई। सबगुनधामरामप्रभुताई
करिहहिंभाइ सकल सेवकाई। होइहि तिहुंपुररामबडाई
तोर कलंकु मोर पछिताऊ। मुयेहुनमिटिहिनजाइहिकाऊ
अबतोहि नीकलागकरुसोई। लोचनओट बैठु मुहुगोई
जबलगिजिअउंकहउंकरजोरी।तबलगिजनिकछुकहसिबहोरी
फिरिपछितैहसि अंत अभागी। मारसिगाइ नहारू लागी

दोहा॥परेउराउ कहि कोटिबिधि काहे करसि निदानु।
कपटसयानि न कहति कछु जागति मनहुं मसानु॥

रामरामरटबिकल भुआलू। जनु बिनु पंष बिहंग बेहालू
हृदय मनाव भोरु जनि होई।रामहिं जाइ कहइजनिकोई
उदउकरहुजनिरबिरघुकुलगुर। अवधबिलोकिसूलहोइहिउर
भूपप्रीति कैकइ काठिनाई। उभयअवधि बिधिरची बनाई
बिलपत नृपहि भयेउभिनुसारा। बीनाबेनुसंषधुनि द्वारा
पढहिंभाटगुनगावहिं गायक।सुनतनृपहिंजनलागहिंसायक
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें। सहगामिनिहि बिभूषनजैसें

तेहि निसि नींद परी नहिं काहू। रामदरस लालसा उछाहू॥
दोहा॥ द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि।
जागेउ अजहुं न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि॥
पाछिले पहर भूपु नित जागा। आजु हमहिं बड अचरजु लागा॥
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई॥
गये सुमंत्रु तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं॥
धाइ षाइ जनु जाइ न हेरा। मानहुं बिपति बिषाद बसेरा॥
पूछे कोउ न ऊतरु देई। गय जेहि भवन भूप कैकेई॥
कहि जय जीव बैठ सिर नाई। देषि भूपगति गयेउ सुषाई॥
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ। मानहुं कमल मूलु परिहरेऊ॥
सचिउ सभीत सकै नहिं पूंछी। बोली असुभ भरी सुभ छूंछी॥
दोहा॥ परी न राजहिं नींद निसि हेतु जान जगदीसु।
रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु॥३८॥
आनहुं रामहिं बेगि बोलाई। समाचार तब पूंछेहु आई॥
चलेउ सुमंत्रु रायरुष जानी। लषी कुचालि कीन्हि कछु रानी॥
सोच बिकल मग परइ न पाऊ। रामहिं बोलि कहिहिं का राऊ॥
उर धरि धीरजु गयउ दुआरें। पूंछहिं सकल देषि मनु मारें॥
समाधानु करि सो सबही का। गयेउ जहां दिनकरकुल टीका॥
राम सुमंत्रहि आवत देषा। आदरु कीन्ह पिता सम लेषा॥
निरषि बदनु कहि भूप रजाई। रघुकुलदीपहिं चलेउ लेवाई॥
रामु कुभांति सचिव संग जाहीं। देषि लोग जहं तहं बिलखाहीं॥
दोहा॥ जाइ दीष रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु।
सहमि परेउ लषि सिंघिनिहि मनहुं बृद्ध गजराजु॥३९॥
सूषहिं अधर जरइं सब अंगू। मनहुं दीन मनिहीन भुअंगू॥

सरुष समीप दीषि कैकेई । मानहुं मीचु घरी गनि लेई
करुनामय मृदु राम सुभाऊ । प्रथम दीष दुषु सुना नकाऊ
तदपिधीरधरि समउ बिचारी । पूंछी मधुरबचनमहतारी
मोहि कहुमातुतातदुषकारन।करिअजतनजेंहिहोइनिवारन
सुनहु राम सब कारनु एहू । राजहिंतुम्हपर बहुत सनेहू
देन कहेन्हि मोहिं दुइ बरदाना।मांगेउं जोकछुमोहिंसोहाना
सो सुनिभयउ भूपउर सोचू । छाडिनसकहिंतुम्हारसंकोचू

दोहा॥सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु ।
सकहु त आयसु धरहुसिरमेटहुकाठिन कलेसु ॥४०॥

निधरकबैठिकहै कटुबानी । सुनत कठिनताअतिअकुलानी
जीभ कमान बचन सरनाना। मनहुंमहिपमृदुलछछसमाना
जनु कठोरपनु धरें सरीरू । सिषइ धनुषबिद्या बरबीरू
सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । बैठि मनहुं तनु धरिनिठुराई
मन मुसुकाइ भानुकुल भानू । रामु सहज आनंद निधानू
बोले बचन बिगत सबदूषन । मृदु मंजुल जनुबागबिभूषन
सुनु जननीसोइसुतुबडभागी। जोपितु मातु बचनअनुरागी
तनय मातु पितु तोषनि हारा । दुर्लभ जननि सकलसंसारा

दोहा॥मुनिगन मिलनुबिसेषि बन सबहि भांतिहितमोर।
तेहि महं पितुआयसु बहुरि संमत जननी तोर॥४१॥

भरतुप्रानप्रियपावहिंराजू।बिधिसबबिधिमोहिंसनमुखआजू
जौं न जाउंबन असेहु काजा।प्रथम गनिय मोहि मूढसमाजा
सेवहिं अरंडु कलपतरुत्यागी।परिहरि अमृतुलेहिं बिषुमांगी
तेउ न पाइअ समउचुकाहीं । देषु बिचारि मातु मनमाहीं
अंब एकु दुषु मोहि बिसेषी । निपट बिकल नरनायकु देषी

थोरिहि बातपितहि दुषभारी। होति प्रतीतिनमोहि महतारी
राउ धीरु गुन उदधि अगाधू। भा मोहि तें कछुबड़अपराधू
जा तें मोहि न कहतकछुराऊ। मोरिसपथतोहिकहुसतिभाऊ

दोहा॥ सहज सरल रघुबरबचन, कुमति कुटिल करिजान।
चलइ जोंक जल बक्रगति जद्यपि सलिलुसमान।४२।

रहसी रानि रामरुष पाई। बोली कपटसनेहु जनाई
सपथ तुम्हार भरत कै आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता। जननी जनक बंधु सुखदाता
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्हपितुमातुबचनरतअहहू
पितहिं बुझाइ कहहु बलिसोई। चौथे पन जेंहि अजसुनहोई
तुम्हसमसुअनसुकृतजेंहिदीन्हे। उचितनतासुनिरादरुकीन्हे
लागहिं कुमुष बचन सुभ कैसे। मगह गयादिकतीरथजैसे
रामहिंमातुबचन सब भाए। जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाए

दोहा॥ गइ मुरुछा रामहिं सुमिरि नृप फिरिकरवटलीन्ह।
सचिव रामआगमन कहि बिनय समयसमकीन्ह॥

अवनिप अकनि रामु पगुधारे। धरि धीरजु तबनयन उघारे
सचिव संभारि राउ बैठारे। चरन परत नृपु रामुनिहारे
लिए सनेहबिकल उर लाई। गै मनिमनहुंफनिकफिरिपाई
रामहिं चितइ रहेउ नरनाहू। चला बिलोचन बारिप्रबाहू
सोकबिबस कछु कहइ न पारा। हृदयँ लगावतबारहिंबारा
बिधिहि मनाव राउ मनमाहीं। जेंहिरघुनाथनकाननजाहीं
सुमिरिमहेसहि कहइ निहोरी। बिनतीसुनहुंसदासिवमोरी
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी। आरति हरहु दीनजनजानी

दोहा॥ तुम्ह प्रेरक सब कें हृदयँ सो मति रामहिं देहु।

बचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥४४॥
अजस होउ जग सुजसु नसाऊं । नरक परौं बरु सुरपुरु जाऊं
सब दुष दुसह सहावउ मोहीं । लोचन ओट रामु जनि होहीं
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी
देस काल अवसर अनुसारी । बोले बचन बिनीत बिचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचित छमब जानि लरिकाई
अति लघु बात लागि दुष पावा । काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा
देषि गोसांइहि पूंछिउं माता । सुनि प्रसंगु भये सीतल गाता

दोहा ॥ मंगलसमय सनेहबस सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइअ हरषि हिय कहि पुलके प्रभुगात ॥४५॥

धन्यजनमु जगतीतल तासू । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताकें । प्रियपितुमातु प्रानसम जाकें
आयेसु पालि जनमफल पाई । अैहउं बेगिहि होउ रजाई
बिदा मातु सन आवौं मांगी । चलिहौं बनहिं बहुरि पगलागी
असकहि रामु गवनु तब कीन्हा । भूप सोकबस उतरु न दीन्हा
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । छुवत चढी जनु सब तन बीछी
सुनि भये बिकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जिमि देषि दवारी
जो जहं सुनइ धुनइ सिरु सोई । बड बिषादु नहिं धीरजु होई

दोहा मुष सुषाहिं लोचन श्रवहिं सोकु न हृदयं समाइ ।
मनहुं करुन रसकटकई उतरी अवध बजाइ ॥४६॥

मिलेहि मांझ बिधि बात बिगारी । जहं तहं देहिं कैकइहि गारी
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ
निजकर नयन काढि चह दीषा । डारि सुधा बिषु चाहत चीषा

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुबंस बेनु बन आगी
पालव बैठि पेड़ु येहि काटा। सुष महुं सोकठाटु धरिठाटा
सदा रामु येहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनुठाना
सत्य कहहिं कबि नारिसुभाऊ। सबबिधिअगहुअगाधदुराऊ
निजप्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई। जानि न जाइ नारिगति भाई

दोहा॥ काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ।
का न करइ अबला प्रबल केहि जग कालु न षाइ॥४७॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा। का देषाइ चह काह देषावा
एककहहिं भलभूपनकीन्हा। बरुबिचारिनहिंकुमतिहिदीन्हा
जोहठिभयेउसकलदुषभाजनु अबलाबिबसग्यानुगुनुगाजनु
एक धरमपरमिति पहिचानें। नृपहिदोसु नहिं देहिं सयानें
सिविदधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सनकहहिं बषानी
एक भरत कर संमत कहहीं। एक उदासभायसुनि रहहीं
कान मूंदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं यहबातअलीहा
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारें। राम भरत कहुंप्रानापियारें

दोहा॥ चंदु चवइ बरु अनलकन सुधा होइ बिषतूल।
सपनेहुं कबहुं न करहिं किछु भरतु रामप्रतिकूल४८

एक बिधातहि दूषनु देहीं। सुधा देषाइ दीन्ह बिषुजेहीं
खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहुउरमिटाउछाहू
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैकई केरी
लगीं देन सिष सीलु सराही। बचन बानसमलागहिंताही
भरतु न मोहिप्रियरामसमाना। सदाकहहु येहुसबुजगुजाना
करहु रामपर सहजसनेहू। केहिअपराध आजु बनुदेहू
कबहुं न किएहु सवतिआरेमू। प्रीतिप्रतीति जान सबुदेमू

कौसल्या अब काह बिगारा। तुम्ह जेहिलागि बज्रपुरपारा
दोहा॥ सीय कि पिय संगु परिहरिहि लषनु कि रहिहहिंधाम
राजु कि भूंजब भरतपुर नृपुकिजिइहि बिनुराम॥४९॥

अस बिचारि उर छाडहु कोहू। सोक कलंक कोठि जनिहोहू
भरतहिं अवसि देहु जुबराजू। कानन काह रामकर काजू
नाहिन रामु राजके भूषे। धरमधुरीन बिषयरस रूषे
गुरुगृह बसहुं रामु तजि गेहू। नृपसन असबरु दूसरलेहू
जौं नहिं लगिहहु कहें हमारें। नहिंलागिहि कछुहाथ तुम्हारें
जौं परिहास कीन्हि कछु होई। तौ कहि प्रगटजनावहु सोई
रामसरिस सुत कानन जोगू। काहकाहिहिसुनितुम्हकहुं लोगू
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई। जेहिबिधिसोकुकलंकुनसाई
छंदु॥ जेहि भांति सोकु कलंकु जाइ उपाय करिकुलपालही।
हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालही॥
जिमिभानुबिनुदिनुप्रानबिनुतनुचंदुबिनजिमिजामिनी।
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनसमुझिधौंजियभामिनी॥
सोरठा॥ सषिन्हसिषावनु दीन्हसुनत मधुरपरिनाम हित।
तेइ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी॥५०॥

उतरु न देइदुसहरिस रूषी। मृगिन्हचितवजनुबाघिनिभूषी
ब्याधिअसाधिजानितिन्हत्यागीचलींकहतमतिमंदअभागी
राजु करत येह दैअं बिगोई। कीन्हेसिअस जसकरइनकोई
एहिबिधिबिलपहिंपुरनरनारी।देहिं कुचालिहिंकोटिकगारी
जरहिं बिषमजर लेहिं उसासा। कवनिराम बिनुजीवनआसा
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी। जनु जलचर गन सूषत पानी
अतिबिषादबस लोग लोगाई। गये मातुपहिं रामगोसांई

मुषुप्रसंन चित चौगुनचाऊ। मिटा सोचु जनि राषइराऊ

दोहा॥ नवगयंदु रघुबीरमनु राजु अलानसमान।
छूट जानि बनगवनु सुनि उर अनंदु अधिकान॥५१॥

रघुकुल तिलक जोरि दोउहाथा। मुदितमातुपद नायेउमाथा
दीन्हि असीस लाइ उरलीन्हे। भूषनबसन निछावरिकीन्हे
बारबार मुष चुंबति माता। नयननेहजलु पुलकितगाता
गोद राषि पुनि हृदयं लगाये। श्रवत प्रेमरसपयद सुहाए
प्रेमप्रमोदु न कछु कहि जाई। रंक धनदपदवी जनु पाई
सादर सुंदरबदनु निहारी। बोली मधुरबचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगनमुदमंगलकारी
सुकृत सील सुष सींव सुहाई। जनमलाभकइ अवधिअघाई

दोहा॥ जेहि चाहत नरनारि सब अतिआरत एहि भांति।
जिमि चातक चातकि त्रिषित बृष्टिसरदारितुस्वाति॥५२

तात जाउं बलिबेगि नहाहू। जो मन भावमधुरकछु षाहू
पितुसमीप तब जायेहु भैआ। भइ बडिबारजाइबलिमैआ
मातबचन सुनि अतिअनुकूला। जनुसनेहसुरतरुके फूला
सुषमकरंद भरे श्रियमूला। निरषि राममनु भवंरुनभूला
धरमधुरीन धरमगति जानी। कहेउमातुसन अतिमृदुबानी
पिता दीन्ह मोहि काननराजू। जहं सब भांति मोरबडकाजू
आयेसु देहि मुदितमन माता। जेंहिमुदमंगल कानन जाता
जनि सनेह बस डरपसि भोरें। आनंदु अंब अनुग्रह तोरें

दोहा॥ बरषचारि दस बिपिन बसि करि पितुबचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देषिहौं मनु जनि करसि मलान॥५३॥

बचन बिनीत मधुररघुबरके। सरसम लगे मातुउर करके

सहमि सूषिसुनि सीतलिबानी। जिमि जवासपरेपावसपानी
कहि न जाइ कछुहृदयं बिषादू। मनहुं मृगीसुनिकेहरि नादू
नयन सजल तनथरथर कांपी। मांजाहिषाइ मीनजनु मापी
धरि धीरजु सुतबदनु निहारी। गदगदबचनकहातिमहतारी
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे। देषिमुदितनितचारितुम्हारे
राजुदेन कहुं सुभदिन साधा। कहेउजानबनकेहि अपराधा
तात सुनावहु मोहि निदानू। कोदिनकरकुलभयेउकृसानू

दोहा॥ निरषि रामरुष सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ॥५४॥

राषि न सकइ न कहिसकजाहू। दुहूं भांति उर दारुन दाहू
लिषत सुधाकर गा लिषि राहू। बिधिगति बामसदासबकाहू
धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गतिसांपछुछुंदरिकेरी
राषौं सुतहि करौं अनुरोधू। धरमु जाइ अरु बंधुबिरोधू
कहौं जान बन तौ बडिहानी। संकट सोच बिबस भइरानी
बहुरिसमुझितियधरमुसयानी। रामुभरतुदोउसुतसमजानी
सरलसुभाउ राममहतारी। बोली बचन धीरधरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितुआयेसुसबधरमकटीका

दोहा॥ राजुदेन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुषलेसु।
तुम्ह बिनभरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंडकलेसु॥५५॥

जौंकेवल पितुआयेसु ताता। तौजनि जाहु जानिबडिमाता
जौं पितुमातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सतअवधसमाना
पितु बनदेव मातु बनदेवी। षग मृग चरनसरोरुह सेवी
अंतहुं उचित नृपहि बनबासू। बय बिलोकि हियंहोइहरांसू
बडभागी बनु अवध अभागी। जोरघुबंसतिलकतुम्हत्यागी

जौं सुतकहौं संग मोहि लेहू । तुम्हरें हृदय होइ संदेहू
पूत परमप्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जीके
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊं । मैं सुनि बचनबैठिपछिताऊं

दोहा॥एह बिचारि नहिं करउं हठ झूठसनेहु बढ़ाइ ।
मानि मातुकरनात बलिसुरति बिसरिजानिजाइ॥५६॥

देव पितरसब तुम्हहिं गोसाईं।राखहुं पलकनयनकी नाईं
अवधि अंबु प्रियपरिजन मीना।तुम्ह करुनाकरधरमधुरीना
अस बिचारिसोइ करहुउपाई।सबहि जिअतजेंहि भेंटहुआई
जाहु सुषेन बनहिं बलि जाऊं।करिअनाथजनपरिजन गाऊं
सबकर आजु सुकृतफल बीता।भयेउ करालुकालु बिपरीता
बहुबिधिबिलपिचरनलपटानी।परमअभागिनिआपुहिजानी
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा।बरनिन जाहिंबिलापकलापा
राम उठाइ मातु उर लाई । कहिमृदुबचनबहुरि समझाई

दोहा ॥ समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासुपद कमलजुग बंदि बैठिसिरुनाइ ॥५७॥

दीन्हिअसीससासुमृदुबानी । अतिसुकुमारिदेषि अकुलानी
बैठि नमित मुख सोचति सीता ।रूपरासि पतिप्रेम पुनीता
चलन चहत बन जीवननाथू । केहिसुकृतीसनहोइहि साथू
की तनुप्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबुकछुजाइनजाना
चारु चरननष लेषति धरनी । नूपुरमुपर मधुर कबि बरनी
मनहुं प्रेमबस बिनती करहीं । हमहिं सीयपदजनिपारिहरहीं
मंजुबिलोचन मोचति बारी । बोली देषि राममहतारी
तातसुनहुंसियअतिसुकुमारी।सासुससुरपरिजनहिंपिआरी
दोहा॥पिता जनक भूपालमनि ससुर भानुकुलभानु ।

पाति रवि कुलकैरव बिपिनबिधुगुनरूप निधानु॥५८॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूपरासि गुन सीलु सुहाई
नयनपुतरि करि प्रीति बढाई । राषेउं प्रान जानकिहिंलाई
कलपबेलिजिमिबहुबिधिलालीसींचिसनेहसलिलप्रतिपाली
फूलत फलत भयेउ बिधि बामा।जानि न जाइ काहपरिनामा
पलंगपीठ तजि गोद हिंडोरा।सियनदीन्हपगुअवनिकठोरा
जिअनमूरिजिमिजोगवतरहऊं। दीपबाति नहिटारन कहऊं
सोइसियचलनचहतिबनसाथा। आयेसु काह होइरघुनाथा
चंद किरन रस रसिक चकोरी।रबिरुषनयनसकै किमिजोरी

दोहा॥करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि।
बिषबाटिका कि सोहसुतसुभगसजीवनिमूरि॥५९॥

बनहित कोल किरात किसोरी।रची बिरंचि बिषयसुषभोरी
पाहनकृमिजिमिकठिनसुभाऊ।तिन्हहिंकलेसुनकाननकाऊ
कै तापसातिय कानन जोगू।जिन्ह तपहेतु तजासबभोगू
सियबनबसिहितातकेहि भांती।चित्रलिषितकपिदेषिडेराती
सुरसर सुभग बनजबनचारी। डाबर जोगु कि हंसकुमारी
अस बिचारिजस आयेसु होई। मैं सिष देउंजानकिहि सोई
जौं सिय भवन रहइ कह अंबा।मोहि कहं होइबहुतअवलंबा
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेहसुधाजनुसानी

दोहा॥कहि प्रियबचन बिबेकमय कीन्हि मातुपरितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुनदोष॥६०॥

मातुसमीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझिमनमाहीं
राजकुमारिसिषावनु सुनहूं।आनभांतिजियंजानिकछुगनहूं
आपन मोर नीक जौ चहहू। बचनु हमार मानि गृह रहहू

आयेसु मोर सासुसेवकाई । सबबिधिभामिनिभवनभलाई
एहितें अधिकु धरमु नाहिं दूजा । सादरसासुससुरपद पूजा
जब जबमातु करिहिसुधिमोरी।होइहिप्रेमबिकलमतिभोरी
तब तब तुम्हकहिकथापुरानी । सुंदरि समुझायेहु मृदुबानी
कहौं सुभाय सपथ सत मोही । सुमुखि मातुहितराखौं तोही

दोहा॥गुरश्रुति संमत धरमफलु पाइअ बिनहिं कलेस ।
हठबस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस॥६१॥

मैं पुनिकरि प्रवान पितुबानी ।बेगिफिरबसुनुसुमुखिसयानी
दिवस जात नहिं लागिहि बारा।सुंदरिसिषवनुसुनहुहमारा
जौं हठ करहु प्रेमबस बामा । तौ तुम्ह दुखुपाउब परिनामा
काननु कठिन भयंकरु भारी । घोर घामु हिमबारि बयारी
कुस कंटक मग कांकरनाना । चलबपयादेंहिबिनुपदत्राना
चरन कमल मृदु मंजुतुम्हारे । मारग अगम भूमिधरभारे
कंदर षोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहिंनिहारे
भालु बाघ बृक केहरिनागा । करहिंनादसुनिधीरजु भागा

दोहा॥भूमिसयन बलकलबसन असनु कंद फलमूल ।
तेकिसदा सब दिन मिलहिंसबुइसमयअनुकूल॥६२॥

नरअहार रजनीचर चरहीं । कपटबेष बिधि कोटिककरहीं
लागइ अति पहार कर पानी।बिपिनबिपतिनहिंजाइबखानी
ब्याल कराल बिहंग बनघोरा। निसिचरनिकरनारिनरचोरा।
डरपाहिंधीर गहनसुधि आएं । मृगलोचनितुम्हभीरु सुभाएं
हंसगवनि तुम्हनहि बनजोगू।सुनिअपजसुमोहिदेइहिलोगू
मानससलिलसुधाप्रतिपाली ।जिअइकिलवनपयोधिमराली
नवरसालबन बिहरनसीला।सोहकिकोकिलाबिपिनकरीला

रहहु भवन अस हृदय बिचारी । चंदबदनि दुषु कानन भारी

दोहा॥सहज सुहृद गुर स्वामि सिष जो न करइ सिर मानि।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हितहानि॥६३॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिअ के।लोचन ललित भरे जल सिय के
सीतल सिष दाहक भइ कैसें । चकइहि सरद चंद निसि जैसें
उतरु न आव बिकल बैदेही।तजन चहत सुचि स्वामि सनेही
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी
लागि सासु पग कह कर जोरी ।छमबि देबि बडि अबिनय मोरी
दीन्हि प्रानपति मोहि सिष सोई।जेहि बिधि मोर परम हित होई
मैं पुनि समुझि दीषि मन माहीं ।पियबियोग सम दुषु जग नाहीं

दोहा॥प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुषद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुषदाई
जहं लगि नाथ नेह अरु नातें।पिय बिनु तियहि तरनिहुं तेतातें
तनु धनु धामु धरनि पुरराजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू
भोग रोग सम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मोकहुं सुषद कतहुं कछु नाहीं
जिअ बिनु देह नदी बिनु बारि। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुष साथ तुम्हारें । सरद बिमल बिधु बदनु निहारें

दोहा॥षग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुषमूल ॥६५॥

बनदेवी बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु संग मंजु मनोज तुराई

कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौंध सत सरिस पहारू
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी
बनदुष नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे
प्रभु बियोग लव लेस समाना। सब मिलि होहिं न कृपानिधाना
असजिय जानि सुजान सिरोमनि। लेइअ संग मोहि छाडिअ जनि
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी

दोहा॥ राषिअ अवध जो अवधि लगि रहत न जानिअहिं प्रान।
दीनबंधु सुंदर सुषद सील सनेह निधान ॥६६॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी
सबहि भांति पिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं
पाय पषारि बैठि तरु छाहीं । करिहौं बाउ मुदित मन माहीं
श्रम कन सहित स्याम तनु देषें । कहं दुष समउ प्रानपति पेषें
सम महि तृन तरु पल्लव डासी। पाय पलोटिहि सब निसि दासी
बारबार मृदु मूरति जोही। लागिहि ताति बयारि न मोही
को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा। सिंघ बधुहिं जिमि ससक सियारा
मैं सुकुमारि नाथ बनजोगू। तुम्हहिं उचित तप मो कहुं भोगू

दोहा॥ ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदय बिलगान ।
तौ प्रभु विषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ६७॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोगु न सकी संभारी
देषि दसा रघुपति जिय जाना। हठि राषे नहिं राषिहि प्राना
कहेउ कृपाल भानु कुल नाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू। बेगि करहु बनगवन समाजू
कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई। लगे मातु पद आसिष पाई
बेगि प्रजा दुष मेटब आई। जननी निठुर बिसरि जनि जाई

फिरिहिदसाबिधिबहुरिकिमोरी।देषिहौं नयन मनोहरजोरी
सुदिनुसुघरीतात कबहोइहि।जननीजिअनबदनबिधुजोइहि

दोहा॥बहुरिबछ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियं हरषि निरषिहोंगात॥६८॥

लषिसनेहकातरिमहतारी ।बचनु न आवबिकलभइभारी
राम प्रबोधु कीन्हबिधिनाना। समउ सनेहु न जाइ बषाना
तब जानकी सासुपग लागी ।सुनिय माय मैं परम अभागी
सेवा समय दैअबनु दीन्हा ।मोर मनोरथसफलनकीन्हा
तजब छोभु जनिछाड़िअ छोहू।करमुकठिनकछु दोसु न मोहू
सुनिसियबचनसासु अकुलानी।दसाकवनिबिधिकहौंबषानी
बारहिं बार लाइ उरलीन्ही। धरिधीरजुसिषआसिषदीन्ही
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जबलगिगंगजमुनजलधारा

दोहा॥ सीतहिं सासु असीस सिष दीन्हि अनेकप्रकार।
चली नाइ पदपदुम सिरु अतिहित बारहिंबार॥६९॥

समाचार जब लछिमन पाये। व्याकुलबिलषिबदनउठिधाये
कंप पुलक तन नयन सनीरा।गहे चरन अतिप्रेम अधीरा
कहिनसकतकछुचितवतठाढे। मीनु दीनु जनुजलतें काढे
सोचुहृदय बिधिकाहोनिहारा। सबसुषु सुकृतुसिरानहमारा
मोकहुं काहकहब रघुनाथा ।रषिहहिं भवनकिलेहहिंसाथा
रामबिलोकि बंधु करजोरें। देह गेह सब सन तृनतोरें
बोले बचनु राम नयनागर। सीलसनेह सरल सुषसागर
तात प्रेमबस जनि कदराहू। समुझि हृदये परिनामउछाहू

दोहा॥मातु पितागुरु स्वामि सिष सिर धरिकरहिंसुभायं।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम करनतरुजनमु जग जायं॥

अस जियँ जानिसुनहु सिषभाई।करहु मातु पितुपदसेवकाई
भवन भरत रिपुसूदननाहीं। राउवृद्ध मम्दुषु मन माहीं
मैं बनजाउंतुम्हहिंलेइसाथा।होइ सबहिविधिअवधअनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुंपरइदुसह दुष भारू
रहहु करहुसबकर परितोषू। न तरु तात होइहिबड दोषू
जासु राज प्रियप्रजा दुषारी।सोनृपुअवसिनरकअधिकारी
रहहु तात असिनीति बिचारी।सुनतलषनुभयेब्याकुलभारी
सिअरेबचन सूषि गये कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें

दोहा॥ उतरु न आवत प्रेमबस गहे चरन अकुलाइ।
नाथ दासु मइं स्वामितुम्ह तजहु त काह बसाइ॥७१॥

दीन्हिमोहिसिष नीकि गोसाईं। लागिअगमअपनी कदराईं
नरबर धीर धरमधुरधारी। निगमनीति कहुं ते अधिकारी
मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला।मंदरु मेरु कि लेहिं मराला
गुर पितुमातु न जानउं काहू। कहउं सुभाउ नाथ पतिआहू
जहं लगि जगत सनेह सगाई। प्रीतिप्रतीतिनिगमनिजुगाई
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतर जामी
धरम नीति उपदेसिअ ताही। कीरतिभूतिसुगतिप्रिय जाही
मन क्रम बचन चरनरत होई। कृपासिंधुपरिहरिअकिसोई

दोहा॥ करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदुबचन बिनीत।
समुझाए उर लाइ प्रभु जानि सनेह सभीत॥७२॥

मांगहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहुबनभाई
मुदितभये सुनि रघुबर बानी। भयेउ लाभबडगइबडिहानी
हरषितहृदय मातु पहिं आए।मनहुंअंधफिरिलोचन पाए
जाइ जननिपगनायेउ माथा। मनु रघुनंदनजानकि साथा

पूंछे मात मलिन मन देखी । लषन कहीसबकथाबिसेषी
गई सहमिसुनि बचनकठोरा । मृगीदेषिदवजनु चहुंओरा
लषन लषेउ भा अनरथआजू । एहिंसनेह बसकरबअकाजू
मांगत बिदा सभयसकुचाहीं।जाइसंगबिधिकहिहिकिनाहीं

दोहा ॥ समुझि सुमित्रा राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ ।
नृपसनेह लषिधुनेउ सिरुपापिनि दीन्हकुदाउ॥७३॥

धीरजुधरेउ कुअवसरजानी।सहज सुहृद बोली मृदुबानी
तात तुम्हारि मातु बैदेही । पितारामुसबभांति सनेही
अवधतहांजहं रामनिवासू । तहइं दिवसु जहं भानुप्रकासू
जौंप सीय रामु बन जाहीं । अवध तुम्हारकाजुकछु नाहीं
गुरपितुमातु बंधु सुर साईं । सेइअहिं सकल प्रानकी नाईं
रामुप्रानप्रिय जीवन जीके । स्वारथरहित सषा सबही के
पूजनीय प्रिय परम जहां तें । सब मानिअहिं राम के नातें
असजिय जानि संगबनजाहू। लेहु तात जग जीवनलाहू

दोहा॥भूरि भागभाजनु भयेहु मोहि समेतबलि जाउं ।
जौं तुम्हरें मन छांडि छलु कीन्ह रामपद ठाउं ।७४॥

पुत्रवती जुबती जग सोई । रघुपतिभगतु जासुसुतु होई
नतरुबांझभलिबादिबिआनी। रामबिमुखसुततें हित जानी
तुम्हरेहि भाग रामु बन जाहीं। दूसरहेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृतकर बडफल एहू । रामसीय पद सहज सनेहू
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू । जानि सपनेहुंइन्हकेबसहोहू
सकलप्रकार बिकार बिहाई । मनक्रमबचन करेहु सेवकाई
तुम्हकहुंबनसबभांतिसुपासू। संग पितुमातुरामुसियजासू
जेंहिनरामु बन लहहिं कलेसू। सुतसोइकरेहुइहइ उपदेसू

छंदु ॥ उपदेसु येहु जेहि तात तुम्हरें रामसियसुषपावहीं ।
पितुमातु प्रिय परिवारु सुषसुरातिबन बिसरावहीं ॥
तुलसी प्रभुहिं सिख देइ आयसु दीन्ह पुनिआसिषदई
रतिहोउअबिरलअमलसियरघुबीरपदनितनितनई ॥

सोरठा ॥ मातुचरन सिरुनाइ चले तुरत संकित हृदय ।
बागुर बिषमतोराइ मनहुं भागमृगु भागबस ॥ ७१ ॥

गयेलषनुजहं जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रियसाथू
बंदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए
कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलिबनाइबिधिबातबिगारी
तन कृसमनदुषुबदनमलीने । बिकलमनहुं माषी मधुछीनें
करमीजहिंसिरुधुनिपछिताहीं । जनु बिनुपंषबिहंगअकुलाहीं
भइ बडि भीर भूपदरबारा । बरनिनजाइ बिषादु अपारा
सचिव उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रियबचन रामुपगु धारे
सियसमेत दोउतनयनिहारी । ब्याकुल भएउभूमिपतिभारी

दोहा ॥ सीयसाहित सुत सुभगदोउ देषि देषि अकुलाइ ।
बारहिंबार सनेहबस राउ लेइ उर लाइ ॥ ७२ ॥

सकइ न बोलि बिकलनरनाहू । सोकजनित उरदारुनदाहू
नाइ सीसु पद अतिअनुरागा । उठि रघुबीर बिदा तबमांगा
पितु असीसआयसुमोहिदीजै । हरषसमय बिसमउकतकीजै
तात किये प्रिय प्रेमप्रमादू । जसु जग जाइ होइ अपबादू
सुनि सनेहबस उठि नरनाहां । बैठारे रघुपति गहि बाहां
सुनहुतात तुम्हकहुंमुनिकहहीं । राम चराचरनायक अहहीं
सुभ अरु असुभ करमअनुहारी । ईसु देइ फलु हृदय बिचारी
करइ जो करम पावफलसोई । निगमनीतिअसिकहसबुकोई

दोहा॥औरु करै अपराधु कोउ और पाव फलभोगु।
अतिबिचित्र भगवंतगति कोजगजानइ जोगु॥७७॥

राय रामराषन हित लागी। बहुत उपाय किये छलुत्यागी
लषी रामरुष रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने
तबनृपसीयलाइउर लीन्ही।अतिहितबहुतभांतिसिषदीन्ही
कहि बन के दुषदुसहसुनाए। सासु ससुर पितुसुषसमुझाए
सियमनुरामचरन अनुरागा।घरुनसुगमु बनु विषमुनलागा
औरउसबहिंसीयसमुझाईकहिकहिबिपिनबिपतिअधिकाई
सचिवनारि गुरनारिसयानी। सहित सनेहकहहिंमृदुबानी
तुम्हकहुं तौन दीन्ह बनबासू।करहु जोकहहिंससुरगुरसासू

दोहा॥सिषसीतलिहितमधुरमृदु सुनिसीतहिनसोहानि।
सरदचंदचंदिनि लगतजनु चकई अकुलानि॥७८॥

सीय सकुचबस उतरु न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकेई
मुनिपट भूषन भाजन आनी।आगे धरि बोली मृदुबानी
नृपहि प्रानप्रियतुम्हरघुबीरा।सील सनेह न छाडिहि भीरा
सुकृतसुजसुपरलोकु नसाऊ।तुम्हहिंजानबनकहिहिनकाऊ
असबिचारिसोइकरहुजोभावारामजननिसिषसुनिसुषपावा
भूपहिबचन बानसम लागे। करहिं न प्रान पयान अभागे
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू।काह करिय कछु सूझ न काहू
रामु तुरत मुनिबेषु बनाई। चले जनक जननी सिरुनाई

दोहा॥साजि बन साजु समाजु सब बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करिसबहिं अचेत॥७९॥

निकसि बसिष्ठद्वार भये ठाढे। देषे लोग बिरहदव दाढे
कहिप्रियबचनसकलसमुझाए। बिप्रबृंद रघुबीर बोलाए

गुरसन कहिबरषासन दीन्हे । आदर दान बिनयबसकीन्हे
जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे
दासी दास बोलाइ बहोरी । गुरहिसौंपिबोले कर जोरी
सबकै सार संभार गोसाईं । करबिजनकजननी की नाईं
बारहिंबार जोरि जुगपानी । कहतरामुसबसन मृदुबानी
सोइ सब भांति मोर हितकारी।जेहितेरहइभुआल सुषारी

दोहा ॥ मातु सकल मोरेंबिरहं जेंहि न होंहि दुष दीन ।
सोइउपाउ तुम्हकरेहु सब पुरजन परमप्रबीन ॥८०॥

एहिबिधिरामसबहिसमुझावा। गुरपदपदुमहरषिसिरुनावा
गनपति गौरि गिरीसुमनाई । चले असीस पाइ रघुराई
रामुचलतअतिभएउबिषादू । सुनिनजाइपुर आरत नादू
कुसगुनलंकअवध अतिसोकू । हरष बिषाद बिबससुरलोकू
गइ मुरुछा तब भूपतिजागे । बोलिसुमंत्रुकहन अस लागे
रामुचले बन प्रान न जाहीं । केहिसुषलागिरहततनमाहीं
एहितेकवन ब्यथाबलवाना । जो दुषुपाइतजिहि तनुप्राना
पुनिधरिधीर कहै नरनाहू । लै रथुसंग सषा तुम्ह जाहू

दोहा ॥ सुठिसुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।
रथचढाइ देषराइबनु फिरेहु गये दिनचारि ॥८१॥

जौंनहिंफिरहिंधीर दोउभाई । सत्यसंध दृढब्रत रघुराई
तौतुम्ह बिनय करेहु करजोरी।फेरिअप्रभुमिथिलेसकिसोरी
जब सियकानन देषि डेराई । कहेहुमोरिसिषअवसरु पाई
सासुससुरअस कहेउ संदेसू । पुत्रिफिरिअबनबहुत कलेसू
पितुगृह कबहुंकबहुं ससुरारी । रहेहुजहांरुचिहोइ तुम्हारी
एहिबिधि करेहु उपायकदंबा । फिरइत होइ प्रान अवलंबा

नाहिंत मोर मरनु परिनामा । कछुनबसाइ भयेबिधिबामा
असकहिमुरुछि परा महिराऊ। रामलषनुसियआनिदेषाऊ

दोहा ॥ पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अतिबेग बनाइ ।
गयेउजहांबाहेर नगर सीयसहितदोउभाइ ८२॥

तबसुमंत्र नृपबचन सुनाए । करि बिनती रथ रामु चढाए
चढिरथ सीयसहित दोउभाई । चलेहृदय अवधहिसिरुनाई
चलतरामुलषिअवध अनाथा । बिकल लोगसब लागे साथा
कृपासिंधुबहुबिधिसमुझावहिं फिरहिंप्रेमबसपुनिफिरिआवहिं
लागतिअवध भयावनिभारी । मानहुं कालरातिअंधियारी
घोर जंतुसम पुर नर नारी । डरपहिं एकहिं एक निहारी
घरमसान परिजन जनुभूता । सुतहितमीतमनहुं जमदूता
बागन्हबिटपबेलिकुम्हिलाहीं । सरितसरोवरदेषि न जाहीं

दोहा ॥ हयगय कोटिन्ह केलिमृगपुरपसु चातक मोर ।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥८३॥

रामबियोग बिकलसब ठाढे । जहंतहंमनहुंचित्रलिषिकाढे
नगरु सफलबनु गहवर भारी। षगमृगाबिपुलसकलनरनारी
बिधिकैकइकिरातिनिकीन्हीं।जेंहिदवदुसहदसहुंदिसिदीन्हीं
सहिनसके रघुबर बिरहागी । चलेलोगसबब्याकुल भागी
सबहिं बिचारु कीन्ह मनमाहीं। रामलषनसियबिनुसुषुनाहीं
जहांरामुतहंसबुइ समाजू । बिनु रघुबीरअवधनाहिंकाजू
चले साथ अस मंत्रु दृढाई । सुरदुर्लभसुषसदन बिहाई
रामचरनपंकजप्रियाजिन्हहीं बिषयभोगबसकरहिंकितिन्हहीं

दोहा॥बालक बृद्ध बिहाय गृह लगे लोग सब साथ ।
तमसा तीर निवासु कियप्रथम दिवस रघुनाथ॥८४॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देषी।सदय हृदय दुषु भएउ बिसेषी
करुनामय रघुनाथ गोसांई। बेगि पाइअहि पीर पराई
कहि सप्रेम मृदुबचन सुहाए।बहुबिधि राम लोग समुझाए
किए धरम उपदेस घनेरे। लोग प्रेमबस फिरहिंन फेरे
सीलु सनेहु छाडि नहिंजाई। असमंजसबस भे रघुराई
लोग सोग श्रम बसगएसोई। कछुक देवमाया मति मोई
जबहिं जामजुगजामिनिबीती।रामसचिवसनकहेउसप्रीती
षोज मारि रथु हांकहु ताता।आनउपायबनिहिनहिंबाता

दोहा॥राम लषनु सिय जानचढि संभुचरन सिरु नाइ।
सचिव चलायेउ तुरत रथु इत उत षोज दुराइ॥८५॥

जागेसकललोग भयें भोरू। गे रघुनाथ भयेउ अतिसोरू
रथकरषोजकतहुंनहिंपावहिं।रामरामकहिचहुंदिसिधावहिं
मनहुं बारिनिधि बूडजहाजू।भयेउबिकलबडबनिकसमाजू
एकहिं एक देहिंउपदेसू। तजे राम हम जानि कलेसू
निंदहिं आपु सराहहिं मीना। धिग जीवनु रघुबीर बिहीना
जौंपैप्रियबियोगुबिधिकीन्हा। तौ कस मरनु न मागें दीन्हा
एहिबिधिकरतप्रलापकलापा। आए अवध भरे परितापा
बिषमबियोगु नजाइ बषाना।अवधिआस सब राषहिंप्राना

दोहा॥रामदरस हित नेम ब्रत लगे करन नरनारि।
मनहुं कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि॥८६॥

सीतासचिवसहित दोउभाई। सृंगबेरपुर पहुंचे जाई
उतरे राम देवसरि देषी। कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी
लषनसचिव सियकिये प्रनामा।सबहिंसहितसुषुपायउरामा
गंग सकल मुद मंगलमूला। सबसुषकरनिहरनिसबसूला

कहि कहिकोटिक कथाप्रसंगा । रामु बिलोकहिं गंगतरंगा
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई बिबुधनदी महिमा अधिकाई
मज्जनु कीन्ह पंथश्रम गयेऊ। सुचिजलु पियत मुदितमन भयेऊ
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू। तेहि श्रम येह लौकिक ब्यवहारू

दोहा॥ सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुलकेतु ।
चरित करत नरअनुहरत संसृति सागर सेतु ॥८७॥

एह सुधि गुह निषाद जबपाई । मुदित लिए प्रियबंधु बोलाई
लिये फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हियहरषु अपारा
करि दंडवत भेंट धरि आगें। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें
नाथ कुसल पदपंकज देषे। भएउं भागभाजनु जन लेषे
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा। मैं जनु नीचु सहित परिवारा
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ। थापिअ जनु सबु लोगु सिहाऊ
कहेहु सत्य सबु सषा सुजाना। मोहि दीन्हा पितु आयेसु आना

दोहा॥ बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु ।
ग्रामबासु नहिं उचित सुनि गुहहि भएउ दुषभारु॥८८॥

राम लषन सिय रूपु निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी
ते पितु मातु कहहु सषि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोयनलाहु हमहिं बिधि दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना
लै रघुनाथहिं ठाउं देषावा। कहेउ राम सब भांति सुहावा
पुरजन करि जोहारु घर आये। रघुबर संध्या करन सिधाए
गुह संवारि साथरी डसाई । कुस किसलय मय मृदुल सुहाई
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि पानी

दोहा॥सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंदमूलफल षाइ ।
सयन कीन्हरघुबंसमनि पाय पलोटत भाइ ॥८९॥

उठे लषनु प्रभु सोवतजानी। कहिसचिवहि सोवन मृदुबानी
कछुकदूरिसजिबानसरासन । जागनलगे बैठि बीरासन
गुहबुलाइ पाहरू प्रतीती । ठावं ठावं राषे अति प्रीती
आपु लषन पहिं बैठेउ जाई। कटिभाथी सरचापचढाई
सोवत प्रभुहि निहारिनिषादू । भयउ प्रेमबस हृदय बिषादू
तनुपुलकितजलु लोचनबहई । बचन सप्रेम लषनसनकहई
भूपति भवन सुभायसुहावा । सुरपतिसदनु न पटतरआवा
मनिमयरचित चारु चौबारे । जनुरतिपतिनिजहाथसंवारे

दोहा--सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमनसुगंधसुबास ।
पलंग मंजु मनिदीप जहं सब बिधि सकल सुपास ॥९०॥

बिबिध बसन उपधान तुराई। छीरफेन मृदु बिसद सुहाई
तहंसियरामुसयननिसिकरहीं।निजछबिरतिमनोजमदुहरहीं
ते सियरामु साथरी सोए ।अमित बसनाबिनुजाहिंन जोए
मातु पिता परिजन पुरबासी।सषा सुसील दास अरु दासी
जोगवहिंजिन्हहिंप्रानकीनाईं।महि सोवत तेइ राम गोसांई
पिता जनक जग बिदितप्रभाऊ। ससुर सुरेससषा रघुराऊ
रामचंदु पति सो बैदेही ।सोवतमहिबिधिबामनकेही
सिय रघुबीर कि कानन जोगू । करमप्रधान सत्य कह लोगू

दोहा॥कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।
जेंहि रघुनंदन जानकिहिसुषअवसरदुषुदीन्ह ॥९१॥

भइदिनकरकुल बिटप कुठारी ।कुमति कीन्हसबबिस्वदुषारी
भयउ बिषादु निषादहिभारी।रामसीय महिसयन निहारी

बोले लषन मधुर मृदु बानी । ग्यानबिरागभगतिरससानी
काहुनकोउ सुषदुष कर दाता । निजकृतकरमभोगसबुभ्राता
जोग बियोग भोग भलमंदा ॥ हितअनहित मध्यम भ्रम फंदा
जनमु मरनुजहंलगिजगजालू । संपति बिपति करमुअरुकालू
धरनि धामु धनु पुर परिवारू । सरगु नरकुजहंलगिब्यवहारू
देषिअ सुनिअ गुनिअ मनमाहीं । मोहमूल परमारथु नाहीं

दोहा ॥ सपने होइ भिषारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।
जागे लाभु न हानि कछु तिमिप्रपंच जियजोइ ॥ ९२ ॥

असबिचारि नहि कीजियरोसू । काहुहि बादि न देइयदोसू
मोहनिंसा सबु सोवनिहारा । देषिअ सपन अनेकप्रकारा
एहिंजगजामिनिजागहिंजोगी । परमारथी प्रपंचबियोगी
जानियतबहिंजीवजगजागा । जबसब बिषयबिलासबिरागा
होइ बिबेकु मोहभ्रम भागा । तब रघुनाथ चरन अनुरागा
सषा परमपरमारथु एहू । मन क्रम बचन रामपद नेहू
राम ब्रह्म परमारथरूपा । अबिगत अलष अनादिअनूपा
सकलबिकार रहित गतभेदा । कहि नित नेति निरूपहिंबेदा

दोहा ॥ भगन भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।
करतचरित धरिमनुजतनुसुनतमिटहिंजगजाल ॥ ९३ ॥

सषासमुझि असपरिहरि मोहू । सिय रघुबीर चरन रतहोहू
कहत रामगुन भा भिनुसारा । जागे जगमंगल सुषदारा
सकल सौच करि राम नहावा । सुचि सुजान बटछीरमगावा
अनुजसहित सिर जटा बनाए । देषि सुमंत्र नयनजलछाये
हृदयं दाहु अतिबदनमलीना । कहकरजोरिबचनअतिदीना
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा । लैरथु जाहु रामकें साथा

बनु देषाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु फेरि बेगिदोउभाई
लषनु रामु सिय आनेहु फेरी । संसयसकल संकोचनिबेरी

दोहा॥नृप अस कहेउ गोसाइंजस कहइकरौं बलिसोइ ।
करिबिनती पायन्ह परेउदीन्ह बालजिमिरोइ॥९४॥

तातकृपाकरि कीजिअ सोई। जातेंअवध अनाथ न होई
मंत्रिहिराम उठाइ प्रबोधा ।तातधरममतुतुम्हसबुसोधा
सिबिदधीच हरिचंद नरेसा ।सहेधरमहित कोटि कलेसा
रंतिदेव बलि भूप सुजाना । धरमुधरेउ सहि संकटनाना
धरमु न दूसर सत्य समाना । आगमनिगमपुरानबषाना
मै सोइधरमुसुलभकरि पावा । तजें तिहूंपुरअपजसु छावा
संभावित कहुं अपजसलाहू । मरनकोटिसमदारुन दाहू
तुम्हसनतात बहुत का कहऊं ।दियेंउतरुफिरिपातकुलहऊं

दोहा ॥ पितुपदगहिकहि कोटि नतिबिनयकरबकरजोरि ।
चिंताकवनिहु बातकै तात करिअजनिमोरि॥९५॥

तुम्हपुनिपितुसमअतिहितमोरें। बिनतीकरौंतात कर जोरें
सबबिधिसोइ करतव्य तुम्हारें। दुषनपावपितु सोच हमारें
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू।भयउसपरिजनबिकलनिषादू
पुनिकछु लषनकही कटुबानी । प्रभुबरजेबडअनुचित जानी
सकुचिराम निजसपथ देवाई । लषनसंदेसुकहिअजनिजाई
कहसुमंत्रु पुनि भूप संदेसू।सहिनसकिहिसियबिपिनकलेसू
जेहिबिधिअवधआवफिरिसीयासोइरघुबरहितुम्हहिकरनीया
नतरु निपटअवलंबबिहीना। मैनजिअब जिमिजलबिनुमीना

दोहा ॥ मइकें ससुरें सकलसुष जबहिं जहां मनुमान।
तहँतबरहिहिसुषेनसिय जबलगिबिपतिबिहान॥९६॥

बिनतीभूपकीन्ह जेहि भांती। आरतिप्रीतिनसोकहिजाती
पितुसंदेससुनिकृपानिधाना।सियहिदीन्हसिषकोटिबिधाना
सासुससुर गुर प्रियपरिवारू। फिरहुतसब करमिटइषभारू
सुनि पतिबचनकहतिबैदेही। सुनहुं प्रानपति परमसनेही
प्रभु करुनामय परमबिबेकी। तनुताजिरहतिछांहकिमिछेकी
प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई। कहं चंद्रिका चंदु तजि जाई
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई। कहतिसचिवसनगिरासुहाई
तुम्हपितुससुरसरिसहितकारीउतरुदेउंफिरिअनुचितभारी

दोहा॥आरतिबस सनमुख भइउं बिलगुनमानब तात।
आरजसुतपद कमलबिनु बादिजहांलगि नात॥९७॥

पितु बैभव बिलास मै डीठा। नृपमनिमुकुटमिलितपदपीठा
सुषनिधान अस पितुगृहमोरें।पियबिहीन मन भाव न भोरें
ससुर चक्कवइ कोसलराऊ।भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ
आगे होइ जेहि सुरपति लेई। अरधसिंहासन आसनु देई
ससुरु एतादृस अवधनिवासू। प्रिय परिवारु मातुसम सासू
बिनुरघुपतिपदपदुमपरागा।मोहि कोउसपनेहुंसुषदनलागा
अगम पंथ बन भूमि पहारा। करि केहरि सर सरितअपारा
कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुषदप्रानपतिसंगा

दोहा॥सासु ससुर सन मोरि हुंति बिनय करबिपरिपायं।
मोरिसोचु जनि करिअ कछु मै बन सुषी सुभायं॥९८॥

प्राननाथ प्रियदेवर साथा। बीर धुरीन धरें धनु भाथा
नहिंमगश्रमुभ्रमुदुषमनमोरें।मोहिलगिसोचुकरिअजनिभोरें
सुमिसुमंत्रुसियसीतलबानी।भयउबिकलजनुफनिमनिहानी
नयन सूझनहिं सुनइंनकाना।कहिनसकइकछुअतिअकुलाना

राम प्रबोधु कीन्ह बहुभांती ।तदपिहोतिनहिंसीतलिछाती
जतन अनेक साथहित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे
मेटि जाइ नहि रामरजाई ।कठिन करमगति कछुनबसाई
राम लषनसियपद सिरु नाई।फिरेउ बनिकु जिमि मूरगंवाई

दोहा॥रथ हांकेउ हय रामतन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देषिनिषाद विषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं॥९९॥

जासु बियोग बिकलपसुऐसे। प्रजा मातु पितु जिइहहिंकैसें
बरबस राम सुमंत्रु पठाये। सुरसरितीर आपतब आये
मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमुमैं जाना
चरन कमल रजकहुं सबुकहई। मानुषकरनि मूरिकछुअहई
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई
तरानिउं मुनिघरिनी होइ जाई।बाट परेई मोरि नाव उड़ाई
एहि प्रतिपालउं सबु परिवारू।नहिंजानौं कछु और कबारू
जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पदपदुम पषारनकहहू

छंद॥ पदकमल धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि रामराउरिआन दसरथसपथ सब सांचीकहौं॥
बरु तीर मारहु लषन पै जब लगि न पायपषारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारुउतारिहौं॥

सोरठा॥सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाअयनचितइ जानकीलषनतन१००

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करुजेहि तवनाव न जाई
बेगि आनु जल पाय पषारू। होत बिलंबु उतारिहि पारू
जासु नाम सुमिरतएकबारा।उतरहिं नर भवसिंधु अपारा
सोइ कृपाल केवटहिनिहोरा।जेंहिजगुकियेतिहुंपगहुंतेथोरा

पदनषनिरषि देवसरिहरषी। सुनिप्रभुबचन मोह मतिकरषी
केवट रामरजायसु पावा। पानि कठवता भरिलेइआवा
अतिआनंदउमगिअनुरागा। चरनसरोज पषारन लागा
बरषि सुमन सुरसकलसिहाहीं। एहिसम पुन्यपुंज कोउनाहीं

दोहा॥पद पषारि जलुपान करि आपु सहित परिवार।
पितरपारुकरि प्रभुहि पुनिमुदितगयउलेइपार॥१०१॥

उतरि ठाढ भए सुरसरिरेता। सीय रामु गुह लषनसमेता
केवट उतरि दंडवतकीन्हा। प्रभुहिसकुचएहिनहिकछुदीन्हा
पियहियकीसियजाननिहारी। मनिमुंदरीमनमुदितउतारी
कहेउ कृपाललेहिउतराई। केवट चरन गहे अकुलाई
नाथ आजु मइ काह न पावा। मिटेदोष दुषदारिददावा
बहुत कालमैं कीन्हि मजूरी। आजुदीन्हबिधिबनिभलिभूरी
अबकछु नाथ न चाहिअमोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें
फिरती बार मोहि जो देवा। सो प्रसादु मइं सिरधरिलेवा

दोहा॥ बहुतु कीन्ह प्रभु लषनसियनहिंकछुकेवटुलेइ।
बिदाकीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरुदेइ॥१०२॥

तबमज्जनुकरिरघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा
सियसुरसरिहि कहेउकरजोरी। मातुमनोरथ पुरउबिमोरी
पतिदेवर संग कुसल बहोरी। आइकरउं जेंहि पूजा तोरी
सुनि सियबिनयप्रेमरससानी। भइतबबिमल बारिबरबानी
सुनु रघुबीरप्रिया बैदेही। तबप्रभाउजगबिदितनकेही
लोकप होंहि बिलोकनतोरें। तोहिसेवहिंसबसिधिकरजोरें
तुम्हजोहमहिंबडिबिनयसुनाई कृपाकीन्हिमोहिदीन्हिबडाई
तदपि देवि मइं देबिअसीसा। सफलहोनहितनिजबागीसा

दोहा ॥ प्राननाथ देवरसहित कुसल कोसला आइ ।
पूजिहि सब मनकामनासुजसु रहिहिजगछाइ॥१०१॥

गंगबचन सुनि मंगलमूला । मुदितसीय सुरसरिअनुकूला
तबप्रभुगुहहिकहेउ घरजाहू। सुनत सूष मुषु भा उरदाहू
दीनबचन गुह कह कर जोरी॥बिनयसुनहुरघुकुलमनिमोरी
नाथ साथ रहि पंथु देषाई । करिदिनचारिचरनसेवकाई
जेहि बन जाइ रहब रघुराई । परनकुटीमै करबि सुहाई
तब मोहि कहं जासिदेबरजाई। सोइ करिहौंरघुबीर दोहाई
सहजसनेह राम लषि तासू । संग लीन्हगुहहृदयहुलासू
पुनिगुहग्यातिबोलिसबलीन्हे।करिपरितोषु बिदातबकीन्हे

दोहा ॥ तब गनपति सिव सुमिरिप्रभु नाइसुरसरिहिमाथ
सषाअनुज सियसहित बनगवनु कीन्हरघुनाथ ॥४॥

तेहिदिन भएउ बिटपतरबासू। लषन सषासबकीन्हसुपासू
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीषिप्रभुजाई
सचिव सत्य श्रद्धा प्रियनारी । माधबसरिसमीतुहितकारी
चारि पदारथ भरा भंडारू। पुन्य प्रदेस देस अतिचारू
छेत्रु अगम गढु गाढ सुहावा। सपनेहुं नहिप्रतिपछिन्हपावा
सेन सकल तीरथ बरबीरा । कलुषअनीक दलनरनधीरा
संगमु सिंहासनु सुठिसोहा । छत्रुअषयबटुमुनिमनुमोहा
चवंर जमुन अरु गंग तरंगा । देषिहोहिंदुष दारिद भंगा

दोहा ॥ सेवहिं सुकृतीसाधु सुचि पावहिं सबमनकाम ।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुनग्राम ॥ ५ ॥

को कहि सकइप्रयागप्रभाऊ । कलुषपुंजकुंजर मृगराऊ
असतीरथपति देषि सुहावा । सुषसागर रघुबर सुषपावा

कहिसियलषनहिसषहिसुनाई। श्रीमुष तीरथराजबड़ाई
करिप्रनामु देषत बन बागा। कहतमहातमअतिअनुरागा
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी। सुमिरतसकलसुमंगलदेनी
मुदित नहाइ कीन्हिसिवसेवा। पूजिजथाबिधि तीरथदेवा
तब प्रभुभरद्वाज पहिं आए। करतदंडवतमुनि उर लाए
मुनिमनमोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंदरासि जनु पाई

दोहा॥ दीन्हि असीस मुनीस उर अतिअनंदुअसजानि।
लोचनगोचर सुकृतफलमनहुंकियेबिधिआनि॥६॥

कुसलप्रश्न करिआसनदीन्हे। पूजिप्रेम परिपूरन कीन्हे
कंद मूल फल अंकुर नीके। दियेआनि मुनिमनहुंअमीके
सीयलषनजन सहित सुहाये। अति रुचिराममूलफलषाये
भये बिगतश्रम रामु सुषारे। भरद्वाज मृदुबचन उचारे
आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजुसुफलजप जोगबिरागू
सफलसकलसुभसाधन साजू। रामतुम्हहिंअवलोकतआजू
लाभअवधिसुषअवधिनदूजी। तुम्हरेंदरसआससब पूजी
अबकरि कृपा देहु बर एहू। निजपद सरसिज सहजसनेहू

दोहा॥ करमबचन मन छाडिछलु जब लगिजनुनतुम्हार।
तब लगि सुषु सपनेहुं नहींकिये कोटि उपचार॥७॥

सुनिमुनिबचन रामु सकुचाने। भावभगतिआनंद अघाने
तबरघुबर मुनि सुजसुसुहावा। कोटिभांतिकहिसबहिसुनावा
सो बड सो सब गुनगन गेहू। जेहिमुनीसतुम्हआदर देहू
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं। बचन अगोचरसुषुअनुभवहीं
एह सुधि पाइ प्रयागनिवासी। बटुतापस मुनिसिद्धउदासी
भरद्वाजआश्रम सब आये। देषन दसरथसुअन सुहाये

रामप्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित भये लहिलोयनलाहू
देहि असीस परमसुषु पाई । फिरे सराहत सुंदरताई

दोहा ॥ रामकीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ ।
चले सहितसियलषनजनमुदितमुनिहिसिरुनाइ॥८॥

रामसप्रेम कहेउ मुनिपाहीं । नाथकहिअहमकेहिमग जाहीं
मुनिमनबिहसिरामसनकहहींसुगमसकलमगतुम्हकहुंअहहीं
साथलागिमुनिसिष्य बोलाये । मुनिमनमुदितपचासकआये
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकलकहहिंमगुदीषहमारा
मुनिबटु चारि संगतब दीन्हे।जिन्हबहुजनमसुकृतसबकीन्हे
करि प्रनामु रिषिआयेसु पाई । प्रमुदित हृदय चले रघुराई
ग्राम निकटजबनिकसहिंजाई । देषहिंदरसुनारिनर धाई
होंहि सनाथ जनमफलु पाई । फिरहिंदुषितमनुसंग पठाई

दोहा ॥ बिदा किये बटु बिनय करि फिरे पाइ मनकाम ।
उतरि नहाये जमुनजल जो सरीरसम स्याम॥९॥

सुनत तीरबासी नरनारी । धाए निज निज काज बिसारी
लषनराम सिय सुंदरताई । देषिकरहिं निज भाग्य बडाई
अतिलालसा बसहिं मन माहीं। नाउं गाउं बूझतसकुचाहीं
जे तिन्हमहुंबयबिरिधसयाने।तिन्हकरिजुगुतिरामुपहिचाने
सकलकथा तिन्ह सबहिं सुनाई। बनहिंचलेपितुआयसुपाई
सुनिसबिषादसकलपछिताहीं । रानीराय कीन्हिभलनाहीं
तेहिअवसर एकतापसुआवा । तेजपुंज लघुबयस सुहावा
कबिअलषितगति बेषु बिरागी । मनक्रमबचनरामअनुरागी

दोहा॥सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि ।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसानजाइबषानि ॥ १०॥

राम सप्रेम पुलकि उरलावा । परमरंक जनु पारस पावा
मनहुं प्रेम परमारथु दोऊ । मिलत धरें तन कहसबुकोऊ
बहुरिलषनपायन्हसोइलागा।लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा
पुनिसियचरनधूरिधरिसीसा।जननिंजानिसिसुदीन्हिअसीसा
कीन्ह निषाद दंडवत तेही ।मिलेउ मुदित लषि रामसनेही
पिअत नयनपुट रूपु पियूषा ।मुदित सुअसनुपाइजिमिभूषा
ते पितु मातु कहहु साषि कैसे ।जिन्ह पठयेबन बालक अैसे
राम लषन सिय रूपु निहारी।होंहि सनेह बिकल नरनारी

दोहा॥तब रघुबीर अनेकबिधि सषहि सिषावनु दीन्ह ।
रामरजायसु सीस धरिभवन गवनु तेंइ कीन्ह ॥११॥

पुनिसिय रामलषनकरजोरी । जमुनहिकीन्ह प्रनामुबहोरी
चले ससीय मुदित दोउ भाई । रबितनुजा कइ करतबड़ाई
पथिक अनेक मिलहिंमगजाता।कहहिंसप्रेम देखिदोउ भ्राता
राजलषन सब अंग तुम्हारें । देषिसोचु अतिहृदयं हमारें
मारग चलहु पयादेहिंपाएं । ज्योतिषु झूठ हमारेंहिभाएं
अगमु पंथु गिरिकानन भारी।तेहि मह साथ नारिसुकुमारी
करिकेहरिबन जाइ न जोई । हम संगचलहिंजोआयसुहोई
जाब जहां लागि तहं पहुंचाई।फिरब बहोरितुम्हहिंसिरुनाई
दोहा ॥ एहि बिधि पूंछहिं प्रेमबस पुलकगात जलुनैन ।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिंकहि बिनीतमृदुबैन॥१२॥

जेपुरगांवबसहिं मगमाहीं । तिन्हहिनागसुरनगर सिहाहीं
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए । धन्यपुन्यमयपरम सुहाए
जहंजहं रामचरन चलिजाहीं।तिन्हसमानअमराबतिनाहीं
पुन्यपुंज मग निकट निवासी।तिन्हहिसराहहिंसुरपुरबासी

जेभरिनयनबिलोकहिंरामहिं।सीतालषनसहितघनस्यामहिं
जेसरसरितराम अवगाहहिं।तिन्हहिदेवसरसरितसराहहिं
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई। करहिकलपतरुतासु बडाई
परसि राम पद पदुम परागा। मानति भूमिभूरिनिजभागा

दोहा॥छांह करहिं घन बिबुधगन बरषहिं सुमनसिहाहिं।
देषत गिरि बन बिहग मृग रामुचले मगजाहिं।१३॥

सीता लषन सहित रघुराई।गांव निकट जब निकसहिं जाई
सुनि सब बाल वृद्ध नरनारी।चलहिं तुरत गृह काज बिसारी
राम लषनसिय रूप निहारी। पाइ नयनफलु होंहि सुषारी
सजलबिलोचनपुलकसरीरा। सब भये मगन देषिदोउबीरा
बरनि न जाइदसा तिन्हकेरी।लहि जनु रंकन्ह सुर मनि ढेरी
एकन्ह एक बोलि सिष देहीं। लोचनलाहु लेहु छन एहीं
रामहिं देषि एक अनुरागे। चितवत चलेजांहि संग लागे
एक नयनमगछबिउरआनी।होंहि सिथिल तन मन बरबानी

दोहा॥एक देषि बटछांह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिंगंवाइअछिनुकुश्रमुगवनबअबहिंकिप्रात।१४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी।अंचइअ नाथकहहिंमृदुबानी
सुनिप्रियबचनप्रीति अतिदेषी।रामु कृपालु सुसील बिसेषी
जानी स्रमित सीय मन माहीं।घरिकबिलंबुकीन्हबटछांहीं
मुदित नारिनर देषहिं सोभा। रूपअनूपनयन मनु लोभा
एकटक सब सोहहिं चहुंओरा। रामचंद्र मुषचंद चकोरा
तरुन तमाल बरन तनु सोहा। देषतकोटिमदन मनु मोहा
दामिनिबरन लषन सुठिनीके। नषसिष सुभगभावतेजीके
मुनिपट कटिन्ह कसे तूनीरा।सोहहिंकरकमलनिधनुतीरा

दोहा ॥ जटामुकुट सीसनिसुभग उर भुजनयन बिसाल ।
सरदपरब बिधुबदनबर लसतस्वेदकनजाल॥१५॥

बरनिनजाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुतथोरिमति मोरी
रामलषन सिय सुंदरताई ।सबचितवहिंचितमनमतिलाई
थके नारिनर प्रेम पियासे । मनहुंमृगीमृग देषि दिआसे
सीयसमीप ग्रामतिय जाहीं। पूंछतअति सनेह सकुचाहीं
बारबार सब लागहिं पाएं । कहहिंबचन मृदुसरलसुभाएं
राजकुमारिबिनयहमकरहीं। तियसुभायकछुपूंछत डरहीं
स्वामिनि अबिनयछमबिहमारी।बिलगुनमानबजानिगंवारी
राजकुअंर दोउ सहज सलोनें। एन्हतेंलहिदुतिमरकतसोनें

दोहा॥ स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा अयन ।
सरदसर्बरी नाथ मुषु सरदसरोरुह नयन ॥१६॥

कोटिमनोज लजावनिहारे । सुमुषिकहहुकोआंहि तुम्हारे
सुनि सनेहमय मंजुलबानी । सकुचीसियमनमहुंमुसुकानी
तिन्हहिंबिलोकि बिलोकतिधरनीं दुहुंसकोचसकुचतिबरबरनीं
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी । बोलीमधुर बचनपिकबयनी
सहजसुभाय सुभग तन गोरे।नामु लषनु लघुदेवर मोरे
बहुरिबदनुबिधु अंचल ढांकी। पियतनचितइ भौंहकरिबांकी
षंजनमंजुतिरीछेनयननि।निजपतिकहेउतिन्हहिसियसयननि
भईंमुदित सब ग्रामबधूटीं । रंकन्ह रायरासि जनु लूटी

दोहा ॥ अतिसप्रेम सियपाय परि बहुबिधिदेहिंअसीस।
सदासोहागिनिहोहुतुम्हजबलगिमहिअहिसीस१७॥

पारबतीसम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाडब छोहू
पुनिपुनिबिनय करिअकरजोरी।जौंएहिमारगफिरिअबहोरी

दरसनु देब जानि निज दासी। लषी सीयसब प्रेमपिआसी
मधुरबचन कहिकहिपरितोषी। जनुकुमुदिनी कौमुदीपोषी
तबहिं लषन रघुबररुष जानी। पूंछेउ मगु लोगन्हि मृदुबानी
सुनत नारिनर भयेदुषारी। पुलकित गात बिलोचन बारी
मिटा मोदु मन भयेमलीने। बिधिनिधिदीन्ह लेतजनुछीने
समुझिकरमगतिधीरजुकीन्हा सोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा

दोहा॥ लषनजानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रियवचन कहि लिएलाइ मन साथ॥१८॥

फिरतनारिनरअतिपछितांहीं। दैअहिदोषु देहिंमन माहीं
सहित बिषाद परसपर कहहीं॥ बिधिकरतबउलटेसबअहहीं
निपट निरंकुस निठुर निसंकू जेंहिससिकीन्हसरुजसकलंकू
रूषु कलपतरुसागरु षारा। तेंहि पठये बन राजकुमारा
जौंपै इन्हहि दीन्ह बनबासू। कीन्हिबादिबिधिभोगाबिलासू
एबिचरहिं मग बिनुपदत्राना। रचे बादिबिधिबाहननाना
ए महि परहिं डासि कुसपाता॥ सुभगसेजकत सृजतबिधाता
तरुबरबासइन्हहिबिधिदन्हा धवलधामरचिरचिश्रमुकीन्हा

दोहा॥ जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिधभांति भूषन बसन बादि किये करतार॥१९॥

जौं ए कंद मूल फल षाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं
एक कहहिं ए सहज सुहाएं। आपुप्रगट भय बिधि न बनाएं
जहंलगिबेदकहीबिधिकरनी॥ श्रवन नयन मन गोचर बरनी
देषहु षोजि भुअनदसचारी॥ कहं अस पुरुष कहां असि नारी
इन्हहि देषिबिधि मनु अनुरागा॥ पटतर जोग बनावइलागा
कीन्ह बहुत श्रम अैक न आये। तेंहि इरिषा बन आनिदुराये

एक कहहिंहमबहुतनजानहिं।आपुहिपरम धन्यकरिमानहिं
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेषे । जे देषहिं देषिहहिं जिन्ह देषे

दोहा॥एहबिधि कहि कहिबचन प्रिय लेहिं नयनभरिनीर।
किमिचलिहहिंमारगअगम सुठि सुकुमारसरीर॥२०॥

नारिसनेह बिकलबस होहीं।चकई सांझ समय जनु सोहीं
मृदुपदकमलकठिन मगुजानी।गहबरि हृदय कहइं बरबानी
परसत मृदुलचरन अरुनारे।सकुचति महि जिमिहृदयहमारे
जौं जगदीस इन्हहिबनुदीन्हा।कस नसुमनमयमारगुकीन्हा
जौं मांगा पाइअ बिधि पाहीं।एरषिअहिंसषिआषिन्हमाहीं
जे नरनारि न अवसर आये। तिन्ह सिय रामु न देषन पाये
सुनि सुरूप बूझहिं अकुलाई।अबलगि गये कहां लगि भाई
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई।प्रमुदित फिरहिं जनमफलुपाई

दोहा॥अबला बालक बृद्धजन कर मीजहिं पछिताहिं।
होंहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहां जहं जाहिं॥२१॥

गांव गांव अस होइ अनंदू। देषि भानुकुलकैरवचंदू
जे कछु समाचार सुनि पावहिं। ते नृपरानिहि दोषुलगावहिं
कहहिं एक अतिभल नरनाहू। दीन्ह हमहिं जेइलोचनलाहू
कहहिं परसपर लोग लोगाई। बातैं सरल सनेह सुहाई
ते पितुमातु धन्य जिन्ह जाये। धन्य सो नगरु जहां तेंआये
धन्य सो देसु सैलु बनगाऊं। जहंजहंजाहिंधन्यसोइठाऊं
सुषु पायेउ बिरंचि रचि तेही। ए जेहि के सब भांतिसनेही
राम लषन पथि कथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई

दोहा॥एहि बिधि रघुकुलकमलरबि मग लोगन्ह सुषदेत।
जांहि चले देषत बिपिन सिय सौमित्रि समेत॥२२॥

आगें रामु लषनु बनें पाछें । तापसबेष बिराजत काछें
उभय बीच सिय सोहति कैसें। ब्रह्मजीव बिच माया जैसें
बहुरिकहउंछबिजसिमनबसई।जनुमधुमदन मध्यरतिलसई
उपमाबहुरिकहउं जियजोही।जनुबुधबिधुबिचरोहिनिसोही
प्रभु पद रेषबीच बिच सीता।धरतिचरनमग चलतिसभीता
सीय राम पद अंक बराएं।लषन चलहिं मगु दाहिनलाएं
राम लषन सिय प्रीति सुहाई।बचनअगोचर किमिकहिजाई
षग मृग मगनदेषिछबि होहीं। लिये चोरि चित राम बटोहीं

दोहा॥जिन्ह जिन्ह देषे पथिक प्रिय सियसमेत दोउ भाइ ।
भवमगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ।.२३॥

अजहुं जासु उर सपनेहु काऊ।बसहुं लषनु सियरामुबटाऊ
रामधाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुंमुनिकोई
तब रघुबीर श्रमित सियजानी।देषि निकट बटुसीतलपानी
तहं बसि कंद मूल फल षाई । प्रात नहाइ चले रघुराई
देषत बन सर सैल सुहाएं । बालमीकिआश्रमप्रभुआएं
रामु दीष मुनिबास सुहावन । सुंदरगिरिकाननुजलुपावन
सरनि सरोज बिटप बन फूले।गुंजत मंजुमधुपरस भूले
षगमृग बिपुल कोलाहलकरहीं।बिरहित बैर मुदितमनचरहीं

दोहा ॥सुचि सुंदर आश्रमु निरषि हरषे राजिवनैन ।
सुनिरघुबर आगमनु मुनिआगे आयेउ लेन॥२४॥

मुनिकहुंरामुदंडवत कीन्हा।आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा
देषिरामछबि नयन जुडाने । करिसनमानुआश्रमहिंआने
मुनिबर अतिथि प्रानप्रियपाए।कंदमूल फल मधुर मगाए
सिय सौमित्रिराम फलषाए।तबमुनिआसन दिये सुहाए

बालमीकि मन आनंदु भारी । मंगलमूरति नयन निहारी
तब करकमल जोरि रघुराई । बोले बचन श्रवनसुषदाई
तुम्ह त्रिकालदरसी मुनिनाथा। बिस्वबदरजिमितुम्हरेंहाथा
असकहिप्रभुसबकथाबषानी।जेहिजेहिभांतिदीन्हबनुरानी

दोहा॥ तातबचन पुनि मातुहित भाइ भरत असराउ।
मोकहुं दरसतुम्हार प्रभु सबु मम पुन्यप्रभाउ॥२५॥

देषि पाय मुनिराय तुम्हारे। भये सुकृत सब सुफल हमारे
अब जहं राउर आयसुहोई। मुनि उदबेगु न पावइ कोई
मुनितापसजिन्हतेंदुषुलहहीं।तेनरेस बिनु पावक दहहीं
मंगलमूल बिप्रपरितोषू । दहइ कोटि कुल भूसुररोषू
असजियजानिकहिअसोइठाऊंसियसौमित्रिसहितजहंजाऊं
तहंरचिरुचिरपरनतृनसाला।बासु करउंकछु काल कृपाला
सहजसरलसुनिरघुबरबानी।साधु साधु बोले मुनि ग्यानी
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू।तुम्ह पालक संततश्रुतिसेतू

छंदु॥ श्रुतिसेतुपालक राम तुम्ह जगदीसमायाजानकी।
जो सृजतिजगु पालति हरति रुष पाइकृपानिधानकी॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरुलषनुसचराचरधनी।
सुरकाजधरिनरराज तनुचलेदलनषलनिसिचरअनी॥
सोरठा॥ रामसरूप तुम्हार बचनअगोचर बुद्धिपर।
अबिगतअकथअपारनेतिनेतिनितनिगमकह२६॥

जगुपेषनतुम्ह देषनिहारे । बिधिहरि संभु नचावनिहारे
तेउ न जानहि मरमुतुम्हारा। औरु तुम्हहिंको जाननिहारा
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानततुम्हहिंतुम्हइहोइजाई
तुम्हरिहिकृपातुम्हहिंरघुनंदन। जानहिंभगतभगतउरचंदन

चिदानंदमय देह तुम्हारी । बिगतबिकार जान अधिकारी
नरतनु धरेहुसंत सुरकाजा। कहहु करहु जसप्राकृतराजा
रामदेषिसुनिचरित तुम्हारे। जड मोहहिं बुध होंहिसुषारे
तुम्हजोकहहु करहुसबुसांचाजसकाछिअतसचाहिअनाचा

दोहा॥पूंछेहु मोहि कि रहौं कहं मै पूंछत सकुचाउं ।
जहं न होहु तहं देहु कहि तुम्हहि देषावउं ठाउं॥२७॥

सुनि मुनिबचन प्रेमरस साने।सकुचिराम मनमहुं मुसुकाने
बालमीकि हंसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिअरसबोरी
सुनहुं रामअबकहहुंनिकेता।जहांबसहु सिय लषनसमेता
जिन्ह के श्रवन समुद्रसमाना।कथातुम्हारि सुभगसरिनाना
भरहिं निरंतरहोंहि न पूरे।तिन्ह के हिय तुम्हकहुंगृहरूरे
लोचनचातक जिन्हकरि राषे।रहहिं दरसजलधर अभिलाषे
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूपबिंदु जल होंहि सुषारी
तिन्ह के हृदयसदन सुषदायक।बसहुबंधुसियसहरघुनायक

दोहा॥जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु ।
मुकताहल गुनगन चुनइ राम बसहु हिय तासु॥२८॥

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा।सादरजासु लहइ नितनासा
तुम्हहिं निवेदित भोजनकरहीं। प्रभुप्रसाद पट भूषनधरहीं
सीस नवहिं सुरगुरुद्विज देषी।प्रीतिसहितकरिबिनयबिसेषी
कर नित करहिं रामपद पूजा। रामभरोस हृदय नहि दूजा
चरन रामतीरथ चलि जांहीं। रामबसहुतिन्हकेमनमांहीं
मंत्रराजुनितजपहिंतुम्हारा ।पूजहिंतुम्हहिंसहितपरिवारा
तरपन होम करहिंबिधिनाना। बिप्र जेंवाइ देहिंबहुदाना
तुम्हतेंअधिकगुरहिजियंजानी। सकलभायसेवहिंसनमानी

दोहा ॥ सबुकरिमांगहि एकु फलु रामचरनरति होउ।
तिन्ह के मनमंदिरबसहु सिय रघुनंदनदोउ॥२९॥

काम मोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न रागनद्रोहा
जिन्ह कें कपट दंभनाहिमाया। तिन्ह कें हृदय बसहुरघुराया
सब के प्रिय सबकेहितकारी। दुषसुषसरिस प्रसंसागारी
कहहिंसत्यप्रियबचनबिचारी।जागत सोवत सरन तुम्हारी
तुम्हहिंछांडिगतिदूसरिनाहीं।राम बसहु तिन्हके मनमाहीं
जननीसम जानहिंपरनारी। धनु पराव बिष तें बिषभारी
जे हरषहिं परसंपति देषी। दुषितहोंहिपरबिपतिबिसेषी
जिन्हहिंरामतुम्हप्रानपिआरे। तिन्हकेमनसुभसदनतुम्हारे

दोहा ॥ स्वामिसषा पितु मातु गुर जिनके सबतुम्हतात।
मनमंदिर तिन्हके बसहु सीयसहित दोउ भ्रात ॥३०॥

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं। बिप्र धेनुहितसंकट सहहीं
नीतिनिपुनजिन्हकइजगलीकाघरतुम्हारातिन्हकरमनुनीका
गुनतुम्हारसमुझइनिजदोसा।जेहि सबभांतितुम्हारभरोसा
रामभगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही
जाति पांति धनु धरमु बडाई। प्रिय परिवार सदन सुषदाई
सब तजि तुम्हहिं रहइ उरलाई। तेहि के हृदय रहहु रघुराई
सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहं तहं देष धरे धनुबाना
करमबचन मन राउर चेरा। राम करहु ते हिके उरडेरा

दोहा ॥ जाहिनचाहिअ कबहुं कछु तुम्हसनसहजसनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निजगेहु॥३१॥

एहिबिधिमुनिबर भवनदेषाए। बचनसप्रेम राममन भाए
कहमुनिसुनहुभानुकलनायकआश्रमुकहउंसमयसुषदायक

चित्रकूट गिरिकरहु निवासू।तहंतुम्हार सब भांति सुपासू
सैलु सुहावन कानन चारू । करि केहरिमृग बिहगबिहारू
नदी पुनीत पुरान बषानी । अत्रिप्रियानिजतपबल आनी
सुरसरिधार नाउं मंदाकिनि । जो सब पातकपोतकडाकिनि
अत्रिआदिमुनिबरबहुबसहीं। करहिंजोगजपतपतन कसहीं
चलहुसफलश्रमसबकरकरहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू

दोहा ॥ चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ ।
आइ नहाये सरितबर सियसमेत दोउ भाइ॥ ३२॥

रघुबरकहेउ लषन भल घाटू। करहुकतहुं अबठाहर ठाटू
लषन दीष पयउतर करारा ।चहुंदिसिफिरेउधनुषजिमिनारा
नदी पनचसरसमदमदाना । सकलकलुषकलिसाउजनाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चुकइ न घात मार मुठभेरी
असकहिलषनठांवदेषरावा। थलुबिलोकिरघुबर सुषु पावा
रमेउराममनु देवन्ह जाना । चले सहितसुरथपति प्रधाना
कोल किरातबेष सब आए । रचे परनतृन सदन सुहाए
बरनिनजाहिंमंजुदुइसाला । एक ललित लघुएक बिसाला

दोहा ॥ लषनजानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत ।
सोहमदन मुनिबेष जनु रतिरितुराजसमेत ॥३३॥

अमरनागकिन्नर दिसिपाला। चित्रकूट आए तेहि काला
रामप्रनामु कीन्ह सब काहू । मुदितदेव लहिलोचनलाहू
बरषिसुमन कह देवसमाजू ।नाथसनाथ भये हम आजू
करिबिनती दुष दुसह सुनाए।हरषितनिजनिजसदनासिधाए
चित्रकूट रघुनंदनु छाए । समाचार सुनिसुनिमुनि आए
आवतदेषि मुदित मुनिबृंदा । कीन्हदंडवत रघुकुलचंदा

मुनिरघुबरहि लाइ उर लेहीं । सुफलहोनहितआसिषदेहीं
सियसौमित्रिरामछबिदेषहिंसाधनसकलसफलकरिलेषहिं

दोहा ॥ जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किये मुनिबृंद ।
करहिंजोगजप जागतप निजआश्रमनि सुछंद॥२४॥

यहसुधिकोलकिरातन्ह पांई । हरषेजनु नवनिधिघरआई
कंदमूल फल भरिभरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना
तिन्हमहं जिन्हदेषे दोउभ्राता।अपरतिन्हहिपूंछहिमगुजाता
कहतसुनत रघुबीर निकाई । आइ सबन्हि देषे रघुराई
करहिं जोहारु भेट धरिआगे।प्रभुहिबिलोकहिंअतिअनुरागे
चित्रलिषे जनु जहं तहं ठाढे । पुलक सरीर नयनजल बाढे
राम सनेहमगन सब जाने ।कहिप्रियबचन सकलसनमाने
प्रभुहिजोहारि बहोरि बहोरी।बचनबिनीत कहहिंकरजोरी

दोहा ॥ अबहमनाथ सनाथ सब भएदेषिप्रभुपाय ।
भाग हमारे आगमनु राउर कोसलराय ॥ २५ ॥

धन्यभूमि बन पंथ पहारा । जहंजहं नाथ पाउ तुम्हधारा
धन्याबिहग मृग काननचारी।सफलजनमभयेतुम्हहिनिहारी
हमसब धन्य सहित परिवारा ।दीषदरसुभरिनयनतुम्हारा
कीन्ह बासु भल ठाउं बिचारी । इहांसकलरितुरहबसुषारी
हमसब भांति करब सेवकाई। करिकेहरिअहिबाघ बराई
बन बेहड गिरिकंदर षोहा । सबहमारप्रभुपगपग जोहा
तहंतहं तुम्हहि अहेर षेलाउब ।सरनिरझरभलठाउंदेषाउब
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचबआयसुदेता

दोहा ॥ बेदबचन मुनिमन अगम ते प्रभु करुनाअयन ।
बचनकिरातन्हके सुनताजिमि पितुबालकबयन॥२६॥

रामहिंकेवल प्रेमु पिआरा। जानिलेउ जो जाननिहारा
राम सकल बनचर तबतोषे। कहि मृदुबचन प्रेमपरिपोषे
बिदा किये सिरुनाइ सिधाये। प्रभुगुन कहतसुनतघरआए
एहिबिधिसियसमेतदोउभाईबसहिंबिपिनसुरमुनिसुषदाई
जबतें आइरहे रघुनायकु। तबतें भएउबनुमंगलदायकु
फूलहिंफलहिंबिटप बिधिनाना। मंजुबलितबरबेलिबिताना
सुर तरुसरिससुभायंसुहाए। मनहुं बिबिधबनपरिहरिआए
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयारिबहइसुषदेनी

दोहा ।। नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्कचकोर।
भांतिभांति बोलहिंबिहग श्रवनसुषद चितचोर।।१७।।

करि केहरि कपिकोलकुरंगा। बिगतबैरबिचरहिंसबसंगा
फिरत अहेर रामछबि देषी। होंहिंमुदित मृगबृंदबिसेषी
बिबुधबिपिनजहंलगिजगमाहीं। देषिरामबनुसकलसिहाहीं
सुरसरि सरसइ दिनकरकन्या। मेकलसुता गोदावरिधन्या
सब सर सिंधुनदीनदनाना। मंदाकिनिकरकरहिंबषाना
उदय अस्त गिरिअरु कैलासू। मंदर मेरु सकल सुरबासू
सैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूटजसु गांवहिंतेते
बिंधिमुदितमन सुषु न समाई। श्रमबिनु बिपुलबडाईपाई

दोहा ।। चित्रकूट के बिहंगमृग बेलिबिटप तृन जाति।
पुन्यपुंज सब धन्य अस कहहिंदेव दिनराति।।१८।।

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी। पाइजनमफलहोंहिबिसोकी
परसि चरनरज अचर सुषारी। भये परमपद के अधिकारी
सो बनु सैलु सुभाय सुहावन। मंगलमयअतिपावनपावन
महिमाकहिअकवानिबिधितासू। सुषसागरजहंकीन्हनिवासू

पयपयोधि तजि अवध बिहाई । जहँसियलषनुरामुरहेआई
काहिनसकहिंसुषमाजसिकानन।जौंसतसहसहोहिसहसानन
सोमै बरनि कहौंबिधि केहीं । डाबरकमठ कि मंदरलेहीं
सेवहिं लषनुकरम मन बानी । जाइ न सीलु सनेहुबषानी

दोहा॥ छिनु छिनु लषि सियरामपद जानि आपु पर नेहु।
करत न सपनेहुं लषनुचितुबंधुमातुपितु गेहु॥३९॥

रामसंग सिय रहतिसुषारी । पुरपरिजनगृहसुरतिबिसारी
छिनुछिनुपियबिधुबदनुनिहारी।प्रमुदितमनहुं चकोरकुमारी
नाहनेहुनितबढतबिलोकी।हरषितरहतिदिवसजिमिकोकी
सियमनुरामचरन अनुरागा ।अवधसहससमबनुप्रियलागा
परनकुटीप्रिय प्रियतम संगा।प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा
सासुससुरसमप्रुनितियमुनिबर।असनुअमिअसमकंदमूलफर
नाथसाथ सांथरी सुहाई । मयनसयन सय सम सुषदाई
लोकप होहिबिलोकतजासू।तेहिकिमोहिसकबिषयबिलासू

दोहा॥ सुमिरत रामहिं तजहिंजन तृनसमबिषयबिलासु।
रामप्रिया जगजननि सिय कछुनआचरजुतासु॥४०॥

सीयलषनजेहिबिधिसुषुलहहीं।सोइरघुनाथकरहिंसोइकहहीं
कहहिंपुरातन कथाकहानी।सुनहिंलषनुसियअतिसुषुमानी
जब जब रामुअवधसुधिकरहीं।तबतबबारिबिलोचनभरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई।भरत सनेहु सीलु सेवकाई
कृपासिंधु प्रभु होहि दुषारी। धीरजुधरहिंकुसमउबिचारी
लषिसियलषनुबिकलहोइजाहीं।जिमिपुरुषहिंअनुसरपरिछांहीं
प्रिया बंधु गति लषि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगतउर चंदनु
लगे कहन कछु कथा पुनीता ।सुनिसुषुलहहिंलषनुअरुसीता।

दोहा॥रामु लषन सीता सहित सोहत परनानिकेत।
जिमि बासवबस अमरपुर सची जयंत समेत॥१४१॥

जोगवहिंप्रभुसियलषनहिकैसे। पलक बिलोचनगोलकजैसे
सेवहि लषनु सीय रघुबीरहि।जिमिअबिबेकीपुरुषसरीरहि
एहिबिधिप्रभुबनबसहिंसुपारी।षगमृगसुरतापस हितकारी
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा।सुनहुंसुमंत्रअवधजिमिआवा
फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुंचाई।सचिवसहित रथदेषेसिआई
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू।कहिनजाइ जसभयउबिषादू
राम राम सिय लषनुपुकारी। परेउ धरनितल ब्याकुलभारी
देषिदषिनदिसिहयहिहिनाहीं।जनु बिनुपंषबिहंग अकुलाहीं

दोहा॥नहि तृन चरहिंन पिअहिं जलु मोचहिं लोचनबारि।
ब्याकुल भए निषाद सब रघुबरबाजि निहारि॥४२॥

धरिधीरजु तब कहइ निषादू। अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू
तुम्ह पंडित परमारथग्याता।धरहुधीरलषि बिमुष बिधाता
बिबिधकथाकहिकहिमृदुबानी। रथ बैठारेउ बरबस आनी
सोकसिथिलरथुसकैन हांकी।रघुबर बिरह पीर उर बांकी
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे।बनमृग मनहु आनिरथजोरे
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें। रामबियोगबिकलदुष तीछें
जो कह रामु लषनु बैदेही।हिंकरिहिंकरिहितहेरहिंतेही
बाजिबिरहगतिकहिकिमिजाती।बिनुमनिफनिकबिकलजेहिभांती

दोहा॥भयउ निषादु बिषादबस देषत सचिवतुरंग।
बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथीसंग॥४३॥

गुह सारथिहि फिरे पहुंचाई।बिरहुबिषादु बरनि नहि जाई
चले अवध लै रथहि निषादा।होंहि छनहिं छनमगनबिषादा

सोच सुमंत्र बिकल दुषदीना। धिग जीवन रघुबीर बिहीना
रहिहिन अंतहु अधमु सरीरू। जसुन लहेउ बिछुरत रघुबीरू
भये अजसअघभाजनप्राना। कवन हेतु नहि करत पयाना
अहह मंद मनु अवसर चूका।अजहुं न हृदय होतदुइटूका
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई।मनहुं कृपन धनरासि गवाई
बिरद बांधि बरबीरु कहाई।चलेउसमर जनु सुभटपराई

दोहा॥बिप्र बिबेकी बेदबिद संमत साधु सुजाति।
जिमि धोषें मदपानकर सचिव सोच तेहि भांति॥४४॥

जिमि कुलीनतियसाधुसयानी।पतिदेवता करम मन बानी
रहै करमबस परिहरि नाहूं।सचिवहृदयतिमिदारुनदाहूं
लोचनसजल डीठिभइथोरी।सुनइंनश्रवनाबिकलमतिभोरी
सूषहिं अधर लागि मुह लाटी।जिउनजाइउर अवधिकपाटी
बिबरन भयउ न जाइनिहारी।मारेसि मनहुं पिता महतारी
हानिगलानिबिपुलमनब्यापी।जमपुर पंथ सोच जिमिपापी
बचनु न आव हृदय पछिताई।अवधकाह मै देषब जाई
रामरहित रथ देषिहि जोई।सकुचिहिमोहिबिलोकतसोई

दोहा॥धाइ पूंछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नरनारि।
उतरु देब मै सबहि तब हृदय बज्रु बैठारि॥४५॥

पुंछिहहिंदीनदुषितसबमाता।कहबकाहमैतिन्हहि बिधाता
पूंछिहि जबहिं लषनमहतारी।कहिहौंकवनसंदेस सुषारी
रामजननि जब आइहि धाई।सुमिरिबच्छुजिमिधेनुलवाई
पूंछत उतर देब मै तेही।गे बनु राम लषनु बैदेही
जोइ पूंछिहि तेहि ऊतरु देबा।जाइ अवधअबएहुसुषुलेबा
पूंछिहि जबहिंराउ दुषदीना।जिवनुजासुरघुनाथ अधीना

देहौं उतरु कौनुमुहु लाई । आयेउं कुसल कुअंर पहुंचाई
सुनतलषन सिय राम संदेसू।तृन जिमितनुपरिहरिहिनरेसू

दोहा ॥ हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु ।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि येहुजातनासरीरु ॥४६॥

एहिबिधिकरत पंथ पछितावा । तमसातीरतुरतरथु आवा
बिदा किये करि बिनयनिषादा ।फिरेपायं परिबिकलाबिषादा
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनुमारेसि गुरुबांभनगाई
बैठि बिटपतर दिवसु गंवावा । सांझसमयतबअवसरुपावा
अवधप्रबेसु कीन्ह अंधिआरें । पैठ भवन रथु राषि दुआरें
जिन्हजिन्ह समाचारसुनिपाये। भूपद्वार रथदेषन आए
रथुपाहिचानि बिकल लषि घोरे।गरहिंगातजिमिआतपओरे
नगरनारि नर ब्याकुलकैसे । निघटत नीर मीनगनजैसे

दोहा॥सचिवआगमनु सुनत सबु बिकलभएउ रनिवासु ।
भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुं प्रेतनिवासु ॥ ४७॥

अतिआरति सब पूंछहि रानी।उतरु नआव बिकलभइबानी
सुनइं न श्रवननयननाहिंसूझा ।कहहुकहांनृपु तेहि तेहिबूझा
दासिन्हदीषसचिवबिकलाई। कौसल्यागृह गईं लवाई
जाइ सुमंत्र दीष कस राजा । अमियरहितजनुचंदुबिराजा
आसन सयन बिभूषन हीना। परेउ भूमितल निपटमलीना
लेइ उसास सोच एहि भांती ।सुरपुर ते जनु षसेउ जजाती
लेतसोचभरि छिनुछिनुछाती। जनुजरिं पंष परेउ संपाती
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लषन बैदेही

दोहा॥देषि सचिव जयजीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनामु ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहंरामु॥४८॥